खतीबे मशरिक़

अ़ल्लामा मुश्ताक़ अहमद निज़ामी

इस्लामी मा'लूमात के लिए पढ़िये

नसीमे रहमत

यानी

मुसन्निफ़

अल्लामा मुश्ताक़ अहमद निज़ामी

गाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़—करिना व उन्सान।
अल्लाहुम्म मन् अहयय्—तहू मिन्ना फ़अह्यिही अलल् इस्लामि व मन् तवफ़्फ़ै—तहू मिन्ना फ़—त—वफ़्फ़हू अलल् ईमान।

अगर नाबालिग़ लड़का है तो यह दुआ पढ़नी चाहिये।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّ
ذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا

अल्लाहुम्मज्—अल्हु लना फ़रतंव् वज् अल्हु लना अज्रंव् व ज़ुख़्रंव् वज् अल्हु लना शाफ़िअंव् व मुशफ़्फ़आ।

और अगर नाबालिग़ लड़की हो तो यह दुआ पढ़नी चाहिये।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا وَّ
ذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً

अल्लाहुम्मज्—अल्हा लना फ़रतंव् वज् अल्हा लना अज्रंव् व ज़ुख़्रंव् वज् अल्हा लना शाफ़ि—अतंव् व मुशफ़्फ़िअह।

नसीमे रहमत

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ وَکَفٰی وَسَلَامٌ عَلٰی حَبِیۡبِہِ الَّذِیۡ اصۡطَفٰی

मुलाक़ात का तरीक़ा

السلام علیکم — अस्सलामु अलैकुम

وعلیکم السلام — वअलैकुमुस्सलाम

सवालः– आप ब ख़ैर व आफ़ियत हैं?

जवाबः– अल्लाह का फ़ज़्ल है और आप की दुआ है।

सवालः– क्या मैं आप से चन्द (कुछ) बातें दरियाफ़्त कर सकता हूँ?

जवाबः– ज़रूर पूछिये जवाब देने की कोशिश करूंगा।

सवालः– आपका क्या नाम है?

जवाबः– मेरा नाम हामिद है।

सवालः– और आप का नाम?

जवाबः– मुझे इक़बाल अहमद कहते हैं।

सवालः– अच्छा यह बताइये आपके मज़हब का क्या नाम है?

जवाबः– इस्लाम।

सवालः– और जो लोग इस्लाम पर ईमान ले आये उन्हें क्या कहते हैं?

जवाब:- मुसलमान।

सवाल:- मुसलमान किसकी बन्दगी करता है?

जवाब:- अल्लाह तआला की।

सवाल:- जो लोग ख़ुदा तआला को नहीं मानते उन्हें क्या कहते हैं?

जवाब:- काफ़िर।

सवाल:- जो लोग बुतों की पूजा करते हैं या दो तीन खुदा मानते हैं उन्हें क्या कहते हैं?

जवाब:- काफ़िर व मुशरिक।

सवाल:- काफ़िर और मुशरिक दोज़ख में जायेंगे या जन्नत में?

जवाब:- दोज़ख में।

सवाल:- अच्छा यह बताइये जो लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मानने वाले हैं उन्हें क्या कहते हैं?

जवाब:- ईसाई।

सवाल:- और जो लोग आग की पूजा करते हैं उन्हें क्या कहते हैं?

जवाब:- मजूसी या पारसी या आतिश-परस्त।

सवाल:- जो लोग हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मानने वाले हैं उन्हें क्या कहते हैं?

जवाब:- यहूदी।

सवाल:- इस्लाम किस मज़हब को कहते हैं?

जवाब:- इस्लाम उस मज़हब को कहते हैं जो यह सिखाता है कि खुदा एक है बन्दगी के लायक़ वही है और हज़रत मुहम्मद

मुस्तफा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम खुदा के बरगुज़ीदा बन्दे और प्यारे रसूल हैं।

सवाल:– आदमी किस तरह इस्लाम में दाखि़ल होता है?

जवाब:– कलिमए–तौहीद पढ़ कर और इस्लाम लाकर।

सवाल:– कलिमए–तौहीद क्या है?

जवाब:– لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ.

'ला इला–ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर–रसूलुल्लाह'। जिसका मतलब यह है अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

इस कलिमे को कलिमए तय्यबा और कलिमए–इस्लाम भी कहते हैं।

सवाल:– कलिमए–शहादत क्या है?

जवाब:– कलिमए–शहादत यह है।

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

अश–हदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाहु व अश–हदु अन्न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू०

तर्जुमा:– मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और गवाही देता हूं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

सवाल:– ईमान की कितनी किस्में हैं?

जवाब:– दो किस्में हैं। (1) ईमाने मुज्मल। (2) ईमाने मुफ़स्सल।

सवाल:– ईमाने मुज्मल किसे कहते हैं?

जवाब:– ईमाने मुज्मल यह है।

آمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَائِهٖ وَصِفَاتِهٖ
وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ ۔

आमन्तु बिल्लाहि कमा हु–व बि अस्माइही व सिफातिही व,
कबिल्तु जमी–अ अहकामिही०

तर्जुमा:– ईमान लाया मैं अल्लाह पर जैसा कि वह अपने नामों और सिफतों के साथ है और मैं ने उसके तमाम अहकाम क़ुबूल किये।

सवाल:– ईमाने मुफ़स्सल क्या है?

जवाब:– ईमाने मुफस्सल यह है।

آمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

आमन्तु बिल्लाहि व मलाइ–क–तेही व कुतुबिही व रुसुलिही
वल् यौमिल आख़िरि वल कदरे ख़ैरिही व शर्रिही मिनल्लाहि
तआला वल बआसि बअदल मौत०

तर्जुमा:– ईमान लाया मैं अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर और क़ियामत के दिन पर और इस पर कि अच्छी और बुरी तक़दीर खुदा तआला की तरफ़ से होती है और मौत के बाद उठाये जाने पर।

सवाल:– आसमान, ज़मीन, चाँद, सूरज, दरिया, पहाड़ सारी कायनात (तमाम दुनिया) का पैदा करने वाला कौन है?

जवाब:– अल्लाह तआला।

सवाल:– क्या अल्लाह तआला झूट बोल सकता है?

जवाब:– नही वह हर ऐब से पाक और साफ है।

सवाल:– क्या अल्लाह तआला अपने किसी काम में किसी से मदद चाहता है?

जवाब:– हरगिज़ नहीं वह जिस चीज को जिस वक़्त पैदा करना चाहता है पैदा करता है वह किसी का मोहताज नहीं।

सवाल:– क्या अल्लाह तआला ने अपने बन्दों की हिदायत के लिए कोई अपना खलीफ़ा भी भेजा है?

जवाब:– जी हाँ।

सवाल:– वह कौन लोग हैं?

जवाब:– नबी और रसूल हैं।

सवाल:– सबसे पहले किस नबी को भेजा?

जवाब:– हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को।

सवाल:– और सबसे आख़िर में?

जवाब:– हमारे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को।

सवाल:– क्या आपके बाद कोई नबी और रसूल आयेगा?

जवाब:– जी नहीं अब दरवाज़–ए–नबुव्वत बन्द हो चुका है हमारे पैग़म्बर खातेमुन–नबिय्यीन (आख़री नबी) हैं अब कोई नबी नहीं आएगा।

सवाल:– हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कौन हैं?

जवाब:– अल्लाह तआला के बरगुज़ीदा बन्दे और उसके रसूल व पैग़म्बर हैं हम लोग उन्हीं की उम्मत में हैं।

सवालः– हमारे पैग़म्बर रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहां पैदा हुए?

जवाबः– मक्का मुअज़्ज़मा में जहाँ ख़ान–ए–काबा है।

सवालः– आपके वालिद और दादा और माँ का क्या नाम था?

जवाबः– आपके वालिद का नाम अब्दुल्लाह और दादा का नाम अब्दुल मुत्तलिब और माँ का नाम बीबी आमिना था।

सवालः– हमारे पैग़म्बर किस महीने में पैदा हुए?

जवाबः– रबीउल अव्वल शरीफ़ के महीने में पैदा हुए। सोमवार का दिन था और बारह तारीख़ थी।

सवालः– हमारे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और दूसरे पैग़म्बरों के मर्तबे में क्या फ़र्क़ है?

जवाबः– हमारे पैग़म्बर मर्तबे में सब पैग़म्बरों से बड़े और अफ़ज़ल और ख़ुदा की सारी मख़लूक़ में सब से बुज़ुर्ग व बरतर हैं।

सवालः– अगर कोई शख़्स हमारे पैग़म्बर को न माने या तौहीन करे वह कैसा है?

जवाबः– जो शख़्स हमारे पैग़म्बर को ख़ुदा का रसूल न माने या ज़बान से उन्हें रसूल मान कर उनकी शान में गुस्ताख़ी व बे–अदबी करे वह काफ़िर है।

सवालः– अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एलाने नबुव्वत का कब हुक्म दिया?

जवाबः– चालीस बरस की उम्र में।

सवाल:- हमारे पैग़म्बर तमाम उम्र कहाँ रहे?

जवाब:- तिर्पन साल की उम्र तक अपने शहर मक्का मुअज़्ज़मा में रहे उसके बाद वहाँ से हिजरत[1] करके मदीना मुनव्वरा चले गये। दस बरस तक वहां रहे फिर तिर्सठ साल की उम्र में आप का इन्तेक़ाल हुआ।

सवाल:- हमारे पैग़म्बर का मज़ार कहां है?

जवाब:- मदीना मुनव्वरा में।

सवाल:- जिस इमारत में आपकी क़ब्र शरीफ़ है उसको क्या कहते हैं?

जवाब:- गुम्बदे खज़्रा।

सवाल:- गुम्बदे खज़्रा में और भी किसी की क़ब्र है?

जवाब:- जी हां हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाह तआला अन्हुमा) की क़ब्रें भी हैं।

सवाल:- क्या नबी और रसूल भी अपनी क़ब्र में सड़ गल कर मिट्टी में मिल जाते हैं?

जवाब:- हरगिज़ नहीं। वह अपनी क़ब्र में ज़िन्दा हैं। अपनी उम्मत का हाल जानते हैं। हमारी नेकी और बदी का उन्हें इल्म है फ़रिश्ते उनकी खिदमत में हाज़िर होते हैं और हमारी आवाज़ भी सुना करते हैं।

सवाल:- हिजरत किसे कहते हैं?

जवाब:- अल्लाह तआला की रज़ा और खुशी के लिये अपने वतन और रिश्तेदारों को छोड़ने को हिजरत कहते हैं।

---

1. अल्लाह की रज़ा के लिए अपने वतन और अहले क़राबत को छोड़ना हिजरत कहलाता है।

सवालः– अल्लाह तआला ने हमारे पैग़म्बर पर जो किताब उतारी उसका क्या नाम है?

जवाबः– उस किताब का नाम क़ुरआन मजीद है।

सवालः– कितने दिनों में पूरा क़ुरआन शरीफ़ नाज़िल हुआ?

जवाबः– तेईस बरस में थोड़ा–थोड़ा नाज़िल हुआ है।

सवालः– क़ुरआन शरीफ़ किस तरह नाज़िल होता था?

जवाबः– अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम क़ुरआन शरीफ़ की कोई सूरत या कुछ आयतें लेकर आते और आपको सुना देते। फिर आप दूसरों को बता देते और लिखवा देते।

सवालः– जिबरील अलैहिस्सलाम कौन थे?

जवाबः– फ़रिश्ते हैं। खुदा तआला का हुक्म पैग़म्बरों के पास लाते थे।

सवालः– हमारे पैग़म्बर को हज़रत जिबरील सिर्फ़ क़ुरआन मजीद की आयतें सुना देते थे या मतलब भी बताते थे?

जवाबः– हज़रत जिबरील सिर्फ़ सुना देते थे। कभी–कभी जिबरील अलैहिस्सलाम खुद भी क़ुरआन शरीफ़ का मतलब नहीं जानते थे। मगर हुज़ूर समझ लेते थे।

सवालः– क्या हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्म हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम से भी ज़्यादा है?

जवाबः– बेशक आपका इल्म सारी मख़लूक़ात से ज़्यादा है। आपको अल्लाह तआला ने तमाम उलूम की कुन्जी अता फ़रमाई है।

सवालः– क्या हमारे पैग़म्बर छुपी हुई बातों को भी

जानते हैं?

जवाबः- जी हाँ! हमारे पैग़म्बर अल्लाह तआला के बताने से ज़ाहिर और खुली यानी (शहादत) छुपी और ग़ाइब (ग़ैब) की तमाम बातें जानते हैं।

सवालः- अच्छा अब यह तो बताईये कि मुसलमान अपने खुदा की बन्दगी कैसे करता है?

जवाबः- नमाज़ पढ़ता है रोज़ा रखता है अपने माल की जकात देता है और हज करता है।

सवालः- नमाज़ पढ़ने से पहले जो लोग हाथ मुँह धोते हैं। उसे क्या कहते हैं?

जवाबः- उसे वज़ू कहते हैं। बगैर वज़ू के नमाज़ नहीं होती।

सवालः- वज़ू करने का क्या तरीका है?

जवाबः- पहले बिस्मिल्लाह पढ़े। फिर दोनों हाथों को कलाई तक तीन बार धोये। फिर उसके बाद तीन बार कुल्ली करे। मिस्वाक न हो तो उंगलियों से दाँत साफ़ करे फिर तीन बार नाक में पानी डाल कर बायें हाथ की उंगली से साफ करे, फिर पूरे चेहरे को तीन तीन बार धोये, इसके बाद दोनों हाथ कुहनियों समेत तीन बार धोये, इसके बाद सर का मसह करे फिर कानों का मसह करे, फिर गर्दन का मसह करे। मसह सिर्फ एक बार करना चाहिये, फिर दोनों पाँव को टख़नों तक तीन बार धोये।

सवालः- नमाज़ पढ़ने से पहले एक शख़्स खड़े होकर *अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर* पुकारता है उसे क्या कहते हैं?

जवाबः- उसको अज़ान कहते हैं।

सवालः- अज़ान किस तरह दी जाती है और उसके

अल्फ़ाज़ क्या हैं?

जवाबः– जब नमाज़ का वक़्त हो जाये तो नमाज़ से कुछ पहले एक शख़्स पच्छिम की तरफ़ मुँह करके ज़ोर–ज़ोर से यह अल्फ़ाज़ कहे उसी को अज़ान कहते हैं।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

(अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है)

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

(अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है)

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अश–हदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाह

(मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं)

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अश–हदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाह

(मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं)

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अश–हदु अन्न मुहम्मदर रसूलुल्लाह

(मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं)

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अश–हदु अन्न मुहम्मदर रसूलुल्लाह

(मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं)

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ　　حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ

हय्य अ़लस्सलाह　　*हय्य अ़लस्सलाह*

(आओ नमाज के लिये)　　(आओ नमाज़ के लिये)

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ　　حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

हय्य अ़लल फ़लाह　　*हय्य अ़लल फ़लाह*

(आओ कामयाबी की तरफ) (आओ कामयाबी की तरफ)

اَللّٰهُ اَكْبَرُ　　اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहु अकबर　　*अल्लाहु अकबर*

(अल्लाह सब से बड़ा है)　　(अल्लाह सब से बड़ा है)

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

ला इला–ह इल्लल्लाह

(अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं)

नोटः– सुबह की अज़ान में *हय्य अ़लल फ़लाह* के बाद *अस्सलातु ख़ैरुम मिनन् नौम* (नमाज़ बेहतर है नींद से) भी दो बार कहना चाहिए।

सवालः– जो शख़्स अजान या तकबीर कहता है उसे क्या कहते हैं?

जवाबः– अजान कहने वाले को मुअज़्ज़िन और तकबीर कहने वाले को मुकब्बिर कहते हैं।

सवालः–अजान या इक़ामत में सरकारे दोअ़लाम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का नाम सुनकर क्या करना चाहिए?

जवाबः– हाथ के दोनों अंगूठों को चूम कर आंखों में मलना चाहिये।

सवालः– जिस तरफ़ मुँह करके नमाज पढ़ते हैं, उसे क्या

कहते हैं?

जवाबः- उसे क़िबला कहते हैं।

सवालः- रात व दिन में नमाज़ कितनी बार पढ़ी जाती है?

जवाबः- रात व दिन में पांच वक़्त की नमाज़ें पढ़ी जाती हैं।

सवालः- पांचों नमाज़ों के नाम क्या हैं?

जवाबः- फ़ज्र, ज़ोहर, अस्र, मग़रिब और इशा यह नाम हैं। **नमाज़े फ़ज्र** सुबह सूरज निकलने से पहले पढ़ी जाती है। दूसरी **नमाज़े ज़ोहर** दोपहर को सूरज ढलने के बाद पढ़ी जाती है। तीसरी **नमाज़े अस्र** सूरज डूबने से एक दो घंटे पहले पढ़ी जाती है। चौथी **नमाज़े मग़रिब** शाम को सूरज डूबने के बाद पढ़ी जाती है। पांचवीं **नमाज़े इशा** मग़रिब के डेढ़ दो घंटे के बाद पढ़ी जाती है।

सवालः- नमाज़ अकेले और जमाअत के साथ पढ़ने में क्या फ़र्क़ है?

जवाबः- जो नमाज़ किसी इमाम के पीछे पढ़ी जाती है वह नमाज़ जमाअत वाली है और जो नमाज़ अकेले पढ़ी जाती है वह नमाज़ मुनफ़रिद नमाज़ है जो शख़्स सबसे आगे नमाज़ पढ़ता है उसको इमाम कहते हैं और जो लोग उस इमाम के पीछे हैं उनको मुक़तदी कहा जाता है। (फ़र्ज़ नमाज़ का जमाअत से पढ़ना वाजिब है)

सवालः- तकबीर किसे कहते हैं?

जवाबः- जब लोग नमाज़ के लिये खड़े होने लगते हैं तो नमाज़ शुरू करने से पहले एक शख़्स वही अल्फ़ाज़ कहता है जो अज़ान में कहे जाते हैं उसे तकबीर और इक़ामत भी कहते हैं

तकबीर में حَیَّ عَلَی الْفَلَاحْ हय्य अलल फ़लाह कहने के बाद قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃُ कद कामातिस सलात भी दो बार कहना चाहिये।

सवालः– अज़ान के बाद कौन सी दुआ मांगी जाती है?

जवाबः– اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِہِ الدَّعْوَۃِ التَّامَّۃِ وَ الصَّلٰوۃِ الْقَائِمَۃِ اٰتِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدَنِ الْوَسِیْلَۃَ وَالْفَضِیْلَۃَ وَالدَّرَجَۃَ الرَّفِیْعَۃَ وَابْعَثْہُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَا نِ الَّذِیْ وَعَدْتَّہٗ وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَہٗ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ اِنَّکَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ بِرَحْمَتِکَ یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ

अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद दअ़वतित्ताम्माति वस्सला तिल काएमतिः आतिः सय्यिदिना मुहम्मद निल् वसील–त वल फ़ज़ील–त वद द–र–जतर्–रफ़ीअ़–त वब् अ़सहू मकामम् महमूद निल लज़ी व अत्तहू वर ज़ुक़्ना शफ़ाअ़तहु यौमल क़ियामते इन्न–क ला तुख़लिफ़ुल मीआ़द, बे रहमति–क या अरहमर राहिमीन0

तर्जुमाः– ऐ वह अल्लाह तआ़ला जो मुकम्मल दुआ और मज़बूत नमाज़ का मालिक है, हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को वसीला इनायत फ़रमा और बुज़ुर्गी और बुलन्द मर्तबा और उन्हें मकामे महमूद पर फ़ाइज़ कर दे जिसका वादा फ़रमाया है और नसीब कर हमको उनकी शफ़ाअ़त क़ियामत के दिन, बेशक तू वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता अपनी रहमत के

सदके उसे सबसे बड़ा रहमत करने वाला।

सवालः- मस्जिद में किस तरह दाख़िल होना चाहिये और उस वक़्त क्या दुआ पढ़ी जाती है?

जवाबः- पहले दायां पाँव दाख़िल करें और यह दुआ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ۔

अल्लाहुम्मफ़्तहली अबवा-ब रहमाति-क0

तर्जुमाः- ऐ अल्लाह तआ़ला तू मेरे लिये अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

सवालः- मस्जिद से किस तरह बाहर आना चाहिये और क्या पढ़ना चाहिये?

जवाबः- पहले बायाँ पाँव बाहर करें और यह दुआ पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलु-क मिन फ़ज़्लेकल-अज़ीम0

तर्जुमाः- ऐ अल्लाह तआ़ला मैं तेरे ला महदूद फ़ज़्ल का तलबगार हूं।

सवालः- हर वक़्त की नमाज़ में अलग-अलग कितनी रक्अ़त नमाज़ पढ़नी चाहिये?

जवाबः- फ़ज्र में चार रक्अ़त, पहले दो रक्अ़त सुन्नत फिर दो रक्अ़त फ़र्ज़। ज़ोहर में बारह रक्अ़त, पहले चार सुन्नत फिर चार फ़र्ज़ उसके बाद दो सुन्नत फिर दो नफ़्ल। अस्र में आठ रक्अ़त, पहले चार सुन्नत फिर चार फ़र्ज़। मग़रिब में सात रक्अ़त, पहले तीन रक्अ़त फ़र्ज़ उसके बाद दो सुन्नत फिर दो नफ़्ल, इशा में सत्तरह रक्अ़त, पहले चार सुन्नत फिर चार फ़र्ज़ उसके बाद दो सुन्नत फिर दो नफ़्ल फिर तीन रक्अ़त वित्र फिर दो नफ़्ल।

सवालः- जुमा में कितनी रकअत नमाज पढ़नी चाहिये?

जवाबः- चौदह रक्अत, चार सुन्नत, दो फ़र्ज़, चार सुन्नत, दो सुन्नत दो नफ़्ल।

सवालः- जुमा की नमाज़ से पहले एक शख़्स मिम्बर पर खड़ा होकर अरबी में कुछ पढ़ता है उसको क्या कहते हैं?

जवबाः- उसे ख़ुतबा कहते हैं।

सवालः- ख़ुतबा का सुनना कैसा है?

जवाबः- वाजिब है। उस वक़्त न तो कोई बात करनी चाहिये और न नमाज़ शुरू करनी चहिये, ख़ामोशी से ख़ुतबा सुनना चाहिये चाहे आवाज़ सुनाई दे या न सुनाई दे।

सवालः- नमाज़ पढ़ने से क्या फ़ाइदा है?

जवाबः- (1) नमाज़ आदमी को गुनाह से रोकती है।

(2) नमाज़ आदमी को अज़ाबे क़ब्र से बचायेगी।

(3) नमाज़ी से अल्लाह और उसके रसूल राज़ी होते हैं।

(4) नमाज़ी के बदन और कपडे साफ़ रहते हैं।

(5) नमाज़ी आदमी को अल्लाह तआला दीन और दुनिया में इज़्ज़त बख़्शता है।

(6) नमाज़ी आदमी की दुआ अल्लाह तआला क़बूल करता है।

(7) नमाज़ी आदमी पर अल्लाह तआला की रहमत नाज़िल होती है।

(9) नमाज़ पढ़ने वाले को अल्लाह तआला जन्नत अता फ़रमायेगा।

सवालः- नमाज़ी नमाज़ की हालत में किसी से गुफ़्तगू (बात-चीत) कर सकता है?

जवाब:- नहीं गुफ़्तगू करने से नमाज़ टूट जायेगी।

सवाल:- अच्छा यह बताईये कि नमाज़ी नमाज़ की हालत में किसी को सलाम कर सकता है या किसी के सलाम का जवाब दे सकता है?

जवाब:- नहीं सलाम करने या सलाम का जवाब देने से भी नमाज़ टूट जायेगी अलबत्ता नमाज़ की दूसरी रक्अत के तशह्हुद में हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सलाम भेजेगा।

सवाल:- नमाज़ तो अल्लाह तआला की इबादत है फिर रसूले खुदा पर सलाम क्यों भेजना चाहिये?

जवाब:- अल्लाह तआला की यही मर्ज़ी है कि वह अपने बन्दे की उसी नमाज़ को कबूल करता है जिसमें रसूले खुदा पर सलाम भेजा जाये।

सवाल:- तो क्या नमाज़ में रसूले खुदा का ख़्याल लाने से नमाज़ हो जायेगी?

जवाब:- बेशक नमाज़ हो जायेगी। जब रसूले खुदा पर सलाम भेजा जायेगा तो उनका ख़्याल यकीनन आयेगा और सलाम उन्हीं के हुक्म से भेजा जाता है।

सवाल:- क्या सलाम के वक्त हुज़ूर का ख़्याल भी लाया जायेगा?

जवाब:- जी हां।

सवाल:- अच्छा अब मुझे यह बताइये कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ में क्या—क्या पढ़ने का हुक्म दिया है और किस तरह नमाज़ पढ़नी चाहिये?

जवाबः– जो चीज़ें नमाज़ में पढ़ी जाती हैं उन सब के नाम और अल्फाज़ यह हैं।

तकबीरः اَللّٰهُ اَكْبَرُ अल्लाहु अकबर (अल्लाह सब से बड़ा है)

सनाः– سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

सुबहानकल्लाहुम्म व बि हम्दि–क व तबा–र कस्मु–क व तआला जददु–क व ला इला–ह ग़ैरु–क०

तर्जुमाः– ऐ अल्लाह हम तेरी पाकी का इकरार करते हैं और तेरी तारीफ़ बयान करते हैं और तेरा नाम बहुत बरकत वाला है और तेरी बुज़ुर्गी बरतर और तेरे सिवा कोई मुस्तहिके इबादत नहीं।

तअव्वुज़ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश–शैता–निर–रजीम०

तर्जुमाः– मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूं शैतान मरदूद से।

तसमीया بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

तर्जुमाः– अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

सूरह फ़ातिहा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ

نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन॰ अर् रह्मानिर् रहीम॰ मालिकि यौमिद्दीन॰ इय्या—क नअ़्बुदु व इय्या—क नस् तई़न॰ एहदिनस—सिरातल् मुस्तकीम॰ सिरातल्—लज़ी—न अन् अम्—त अलैहिम॰ ग़ैरिल् मग़ज़ूबि अलैहिम् वलज़्—ज़ाल्लीन॰ आमीन॰

तर्जुमा:- तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिये जो सारे जहानों का पालने वाला बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है। रोजे जज़ा का मालिक है, ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं कि सीधे रास्ते पर चला। उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तूने इनआम फ़रमाया है, न उनके रास्ते पर जिन पर तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ और न गुमराहों के रास्ते पर।

सूरह कौसर اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝ اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝

इन्ना अअ़्तैना कल् कौसर॰ फ़सल्लि लि रब्बि—क वन्हर॰ इन्न शानि—अ—क हुवल् अब्तर०

तर्जुमा:- ऐ नबी हमने आपको कौसर अता की है। बस आप अपने रब के लिये नमाज़ पढ़िये और क़ुरबानी कीजिये। बेशक आपका दुश्मन ही बे नाम और निशान हो जाने वाला है।

सूरह इखलास قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

.कुल हुवल्लाहु अहद. अल्लाहुस–समद. लम् यलिद. व लम् यूलद. व लम् यकुल–लहू कुफ़ुवन् अहद.

तर्जुमा:- (ऐ नबी) कह दीजियें वह अल्लाह एक है अल्लाह बे नियाज है उससे कोई पैदा नहीं हुआ और न वह किसी से और कोई उसका हमसर (बराबर) नहीं।

सूरह फलक قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۔ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۔ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۔ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۔

.कुल अऊज़ु बि रब्बिल् फलक. मिन् शर्रि मा ख़लक. व मिन् शर्रि ग़ासिकिन् इज़ा वकब. व मिन् शर्रिन् नफ़्फ़ासाति फ़िल् उक़द. व मिन् शर्रि हासिदिन् इज़ा हसद.

तर्जुमा:- कह दीजिये [illegible] की पनाह लेता हूं। जो सुबह का पैदा करने वाला है उसकी सब मख़लूक़ के शर से और अंधेरी डालने वाले के शर से जब वह डूबे और उन औरतों के शर से जो गिरहों में फूँकती हैं और हसद वाले के शर से जब वह मुझ से जले।

सूरह अन्नास قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۔ مَلِكِ النَّاسِ ۔ إِلٰهِ النَّاسِ ۔ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۔ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۔ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

.कुल अऊज़ु बि रब्बिन् नासि. मलिकिन् नासि इलाहिन् नासि. मिन शर्–रिल–वस्वासिल् ख़न्नास. अल्लज़ी युवस् विसु फी सुदूरिन् नास. मिनल् जिन्नाति वन्नास.

तर्जुमा:- (ऐ नबी) कहो कि मैं आदमियों के रब की पनाह

लेता हूं आदमियों के बादशाह। आदमियों के माबूद की पनाह लेता हूं उस वस्वसा डालने वाले, पीछे हट जाने वाले के शर से जो लोगों के दिलों में वस्वसा डालते हैं जिन्नों में से हों या आदमियों में से।

रूकूअ़ की तस्बीह

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْمِ ط सुबहान–रब्बियल अ़ज़ीम॰

तर्जुमाः– पाकी बयान करता हूं अपने परवरदिगार बुज़ुर्ग की।

क़ौमा यानी रूकूअ से खड़े होने की तस्बीह

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह

तर्जुमाः– अल्लाह तआ़ला ने उसकी सुन ली जिसने उसकी तारीफ़ की।

इसी क़ौमा की तहमीद तस्बीह के बाद

رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ. रब्बना लकल हम्द

तर्जुमाः– ऐ हमारे परवरदिगार तेरे लिये ही तमाम तारीफ़ है।

सज्दे की तस्बीहः–

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی सुबहा–न रब्बियल आला

तर्जुमाः– पाकी बयान करता हू मैं अपने परवरदिगार बरतर की।

तशह्हुद या अत्तहिय्यात اَلتَّحِیَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ

وَالطَّیِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّهَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰهِ

الصّٰلِحِیْنَ ط اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ

اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस् सलवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अ़लै–क अय्युहन् नबीय्यु व रह्–मतुल्लाहि व ब–र–कातुहू अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल्लाहिस्सालिहीन॰

अश्–हदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाहु व अश्–हदु अन्न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू॰

तर्जुमाः- सब इबादतें जो ज़बान बदन और माल से हो सकें अल्लाह ही के लिये है सलाम हो तुम पर ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें, सलामती हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर, गवाही देता हूं मैं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और गवाही देता हूं मैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुदा के बन्दे और रसूल हैं।

दुरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى
اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ
عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرٰهِيْمَ
وَعَلٰى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै–त अ़ला इब्राही–म व अ़ला आलि इब्राही–म इन्न–क हमीदुम–मजीद॰

अल्लाहुम्म बारिक् अ़ला मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि मुहम्मदिन्

कमा बारक्–त अला इब्राही–म व अला आलि इब्राही–म इन्न–क ह़मीदुम मजीद०

तर्जुमा:– ऐ अल्लाह हमारे आक़ा सय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उनकी आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने हज़रत सय्यदना इबराहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम और उनकी आल पर रहमत नाज़िल फ़रमाई है बेशक तू तारीफ़ और बुज़ुर्गी वाला है। ऐ अल्लाह हमारे आक़ा सय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर और उनकी आल पर बरकत नाज़िल फ़रमा, जिस तरह तूने हज़रत सय्यदना इबराहीम अलैहिस्सलाम और उनकी आल पर बरकतें नाज़िल फ़रमाई हैं बेशक तू तारीफ़ और बुज़ुर्गी वाला है।

दुरूद शरीफ़ के बाद की दुआ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ

وَلِمَنْ تَوَالَدَ وَلِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ الْاَحْيَاءِ مِنْهُمْ

وَالْاَمْوَاتِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ۝

अल्लाहुम्मग़्–फ़िरली व लि वालिदय्य व लिमन तवा–ल–द व लि जमीअ़िल मुमिनी–न वल मुमिनाते वल् मुसलिमी–न वल मुसलिमातिल् अह़याअि मिनहुम वल अम्वाति बि–रह़्मति–क या अर्ह़मर् राह़िमीन०

तर्जुमा:– ऐ अल्लाह मग़फ़िरत फ़रमा मेरी और मेरे वालिदैन की और उनकी जो उनसे पैदा हुए और तमाम मोमिनीन व

मोमिनात व मुस्लिमीन और मुस्लिमात (औरतें) की जो उनमें से ज़िन्दा हैं या मुर्दा अपनी रहमत के वसीले में ऐ अरहमुर राहिमीन।

सलाम - اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ۔

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह

तर्जुमा:- सलाम हो तुम पर और अल्लाह की रहमत।

नमाज़ के बाद की दुआ رَبَّنَا اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ۔

रब्बना आतिना फ़िद-दुन्या ह-स-नतंव व फ़िल आख़िरति ह-स-नतंव व-क़िना अ़ज़ाबन्-नार.

तर्जुमा:- ऐ हमारे परवरदिगार तू हमको दुनिया में नेकी दे और आख़िरत में हमको नेकी और हमको दोजख़ के आग से बचा।

दुआए क़ुनूत اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِىْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّىْ وَنَسْجُدُ اِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ۔

अल्लाहुम्म इन्ना नसतईनु-क व नसतग़फ़िरु-क व नुअमिनु बि-क व न-त-वक्कलु अलै-क व नुसनी अलैकल ख़ैर व नश कुरु-क वला नक्फ़ुरु-क व नख़्लउ व नतरुकु मंय्यफ़ जुरु-क अल्लाहुम्म इय्या-क नअबुदु व ल-क नुसल्ली व नसजुदु इलै-क नसआ व नहफ़िदु व नरजू रह्म-त-क व नख़शा अज़ाब-क इन्न

अज़ाब—क बिल् कुफ्फ़ारि मुलहिक़.

तर्जुमाः- ऐ परवरदिगार हम तुझसे मदद चाहते हैं और तुझसे माफ़ी मांगते हैं और ईमान लाते हैं तुझ पर और भरोसा रखते हैं तुझ पर और तारीफ़ करते हैं तेरी अच्छी और हम तेरा शुक्र अदा करते हैं और हम नाशुक्री नहीं करते तेरी और हम उससे अलग होते हैं जो तेरी नाफ़रमानी करते हैं। ऐ अल्लाह तेरे ही लिये इबादत करते हैं और तेरे ही लिये नमाज़ पढ़ते और सज्दा करते हैं और तेरी ही तरफ़ दौड़ते हैं और हम तेरी ख़िदमत में हाज़िर हैं और उम्मीदवार हैं तेरी रहमत के और डरते हैं तेरे अ़ज़ाब से बेशक तेरा अ़ज़ाब काफ़िरों को मिलने वाला है।

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

सवालः- नमाज़ पढ़ने का क्या तरीक़ा है?

जवाबः- पहले वज़ू कीजिये और पाक कपड़े पहने हुए पाक ज़मीन पर क़िबला मुँह खड़े होकर जिस नमाज़ का वक़्त हो उस नमाज़ की नीयत करके दोनों हाथ कानों की लौ तक उठाइये और *अल्लहु अकबर* कह कर दोनों हाथों को नाफ़ के नीचे इस तरह बाँध लीजिये कि दायां हाथ ऊपर रहे और बायां नीचे रहे इसके बाद सना पढ़िये यानी سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

सुबहा—न—कल्लाहुम्म व बि हम्दि—क व तबा—र—कस्मु—क व तआ़ला जद्दु—क व ला इला—ह ग़ैरु—क. फिर तअ़व्वुज़ पढ़िये यानी *अऊज़ु*

बिल्लाहि मिनश्-शैतानिर्-रजीम॰ और फिर तसमीया पढ़िये यानी بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ *बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम* पढ़ कर सूरह अल्हम्द शरीफ़ ख़त्म करके *वलज़्ज़ाल्लीन* के बाद बहुत आहिस्ता (धीमे) से *आमीन* कहिये फिर सूरह कौसर या कोई और सूरह जो याद हो उसको पढ़िये फिर *अल्लाहु अकबर* कहते हुए रुकूअ़ के लिये झुक जाइये और रुकूअ़ में दोनों घुटनों को हाथों से पकड़ के रुकूअ़ की तस्बीह पढ़िये यानी سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْم *सुब्हा-न रब्बियल् अ़ज़ीम॰* तीन मर्तबा, या पँच मर्तबा या सात मर्तबा या नौ मर्तबा पढ़िये (ताक़ पढ़ना चाहिये)। फिर तसमीअ यानी سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ *समिअ़ल्लाहु लिमन् ह़मिदह॰* कहते हुए सीध खड़े हो जाइये। तहमीद (*रब्बना लकल् ह़म्द॰* भी पढ़ लीजिये) फिर तकबीर कहते हुए सज्दे में इस तरह जाइये कि पहले दोनों घुटने ज़मीन पर रखिये फिर दोनों हाथ ज़मीन पर रखिये फिर दोनों हाथ के बीच में पहले नाक फिर पेशानी ज़मीन पर रखिये इसके बाद सज्दे की तस्बीह पढ़िये यानी سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى *सुब्हा-न रब्बियल आला॰* तीन, पांच, सात या नौ बार पढ़िये फिर तकबीर कहते हुए सर उठाइये और सीधे बैठ जाइये और फिर तकबीर कहते हुए पहले की तरह दूसरा सज्दा कीजिये और सज्दे की तस्बीह पढ़िये। उसके बाद तकबीर कहते हुए सीधे खड़े हो जाइये और हाथों को ज़मीन पर न टेकिये। सज्दों तक नमाज़ की एक रक्अ़त पूरी हो गयी। अब दूसरी रक्अ़त शुरू हुई तसमिया पढ़ कर अल्हम्द शरीफ़ पढ़िये। और सूरह इख़लास या और कोई दूसरी सूरह मिला कर, फिर रुकूअ़ कीजिये और पहली रकअ़त की तरह इसमें रुकूअ़,

में किस तरह बैठना चाहिये?

जवाबः– दाहिना पाँव खड़ा रखिये और उसकी उंगलियां क़िबला की तरफ हों और बायां पाँव बिछा कर उस पर बैठ जाइये। बैठने की हालत में दोनों हाथ रानों पर घुटने के पास रखने चाहियें।

सवालः– रुकूअ़ करने का सही तरीक़ा क्या है?

जवाबः– रुकूअ़ इस तरह करना चाहिए कि कमर और सर दोनों बिल्कुल बराबर रखें और घुटनों को हाथ से पकड़ लिया जाये।

सवालः– सज्दा करने का सही तरीक़ा क्या है?

जवाबः– हाथों की दोनों हथेलियों को ज़मीन पर बिछा कर इस तरह रखें कि कलाई और कुहनी ज़मीन से ऊँची रहे और पेट रानों से अलग रहे और दोनों हाथ पसलियों से अलग हों और नाक और पेशानी ज़मीन पर जमी रहें।

सवालः– नमाज़ के बाद उमूमन जो तस्बीह पढ़ी जाती है उसको क्या कहते हैं?

जवाबः– उसको तस्बीहे फ़ातिमा कहते हैं।

सवालः– तस्बीहे फ़ातिमा में क्या पढ़ना चाहिये?

जवाबः– *सुबहानल्लाह* 33 बार

अल्हम्दु लिल्लाह 33 बार *अल्लाहु अकबर* 34 बार।

सवालः– इस तस्बीह को तस्बीहे फ़ातिमा क्यों कहते हैं?

जवाबः– हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी प्यारी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को इस तस्बीह के लिये फ़रमाया था और इसकी बहुत सी

फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई थी इसी वजह से इसको तस्बीहे फातिमा कहते हैं।

नमाज़े जनाज़ा

सवाल:- नमाज़े जनाज़ा किसे कहते हैं?

जवाब:- मय्यत की मग़फ़िरत के लिये जो नमाज़ पढ़ी जाती है उसे नमाज़ें जनाज़ा कहते हैं।

सवाल:- नमाज़े जनाज़ा का क्या हुक्म है?

जवाब:- नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है यानी अगर एक शख़्स भी नमाज़े जनाज़ा पढ़ लेगा तो तमाम लोग बरीउज़्ज़िम्मा हो जायेंगे। वरना जिस जिस को ख़बर पहुंची थी और न पढ़े वह सब गुनहगार होंगे।

सवाल:- क्या नमाज़े जनाज़ा के लिये जमाअत शर्त है?

जवाब:- नहीं अगर एक शख़्स भी पढ़ लेगा तो फ़र्ज़ अदा हो जायेगा।

सवाल:- नमाज़े जनाज़ा के कितने अरकान हैं?

जवाब:- दो रुकन (ज़रूरी हिस्सा) हैं। अव्वल चार बार *अल्लाहु अकबर* कहना, दूसरा क़ियाम यानी खड़ा होना इस शर्त के साथ कि कोई उज़्र (बहाना) न हो।

सवाल:- नमाज़े जनाज़ा में कितनी सुन्नतें हैं?

जवाब:- तीन हैं और वह यह हैं (1) अल्लाह की हम्द व सना करना (2) नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजना। (3) मय्यत के लिये दुआ करना।

सवाल:- नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का क्या तरीक़ा है?

जवाब:- नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का तरीक़ा यह है कि कान तक हाथ उठा कर *अल्लाहु अकबर* कहता हुआ हाथ नीचे लाये और नाफ़ के नीचे हस्बे–दस्तूर दोनों हाथ को बांध लें उसके बाद सना पढ़े यानी سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَاءُكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

सुब्हा–न–कल्लाहुम्म व बिहम्दि–क व तबा–र कस्मु–क व तआला जद्दु–क व जल्ल सनाउ–क व ला इला–ह ग़ैरु–क.

फिर बग़ैर हाथ उठाये दूसरी बार *अल्लाहु अकबर* कहे और दुरूद शरीफ़ पढ़े नमाज़ में अत्तहिय्यात के बाद जो दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाता है उसी दुरूद का पढ़ना बेहतर है। फिर बग़ैर हाथ उठाये तीसरी बार *अल्लाहु अकबर* कहे और मय्यत के लिये दुआ मांगे। जब मय्यत के लिये दुआ मांग ले तो बग़ैर हाथ उठाये चौथी बार *अल्लाहु अकबर* कहे और उसके बाद बग़ैर कोई दुआ पढ़े हुए हाथ खोल कर सलाम फेरदे और सलाम में मय्यत व फ़रिश्तों और हाज़िरीने नमाज़ की नीयत करे।

सवाल:- नमाज़े जनाज़ा में कौन सी दुआ पढ़नी चाहिए?

जवाब:- बालिग़ मर्द और औरत के लिए यह दुआ पढ़नी चाहिये।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا
وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ
اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ
تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ

अल्लाहुम्मग़्–फ़िर्लि हय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व

ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़-करिना व उन्साना.

अल्लाहुम्म मन् अहयय्-तहू मिन्ना फ़अह्यिही अलल् इस्लामि व मन् तवफ़्फ़ै-तहू मिन्ना फ़-त-वफ़्फ़हू अलल् ईमान.

अगर नाबालिग लड़का है तो यह दुआ पढ़नी चाहिये।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّ
ذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا

अल्लाहुम्मज्-अलहु लना फ़रतंव वज् अलहु लना अज्रंव व ज़ुख़्रंव वज् अलहु लना शाफ़िअंव व मुशफ़्फ़ा.

और अगर नाबालिग लड़की हो तो यह दुआ पढ़नी चाहिये।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا وَّ
ذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً

अल्लाहुम्मज्-अलहा लना फ़रतंव वज् अलहा लना अज्रंव व ज़ुख़्रंव वज् अलहा लना शाफ़ि-अतंव व मुशफ़्फ़िअह.

अल्लाह तआ़ला के बारे में मुसलमानों के अक़ीदे

(1) अल्लाह सबसे बड़ा है।

(2) अल्लाह तआ़ला एक है उसका कोई शरीक नहीं और वही पूजने के लाइक़ है।

(3) वह हमेशा से है, और हमेशा रहेगा।

(4) वह हर ऐब से पाक और साफ है, वह न झूट बोलता है न कोई ऐब करता है, न खाता है न पीता है न सोता है।

(5) वही सारी मख़लूक़ात का पैदा करने वाला है।

(6) उसको किसी ने पैदा नहीं किया।

(7) वह किसी का मुहताज नहीं।

(8) वह हर बात को जानता है, उससे कोई बात पोशीदा (छुपी) नहीं।

(9) न उसका बाप है, न बेटा, न बेटी, न बीवी, रिश्ता नाता से पाक साफ़ है।

(10) वह नूर ही नूर है।

(11) मख़लूक़ जैसे हाथ, पाँव, नाक, कान, शक्ल, सूरत से पाक है।

(12) वही सब को रोज़ी देता है।

(13) मौत और ज़िन्दगी सब उसी की क़ुदरत में है।

(14) इज़्ज़त, ज़िल्लत, अमीरी, ग़रीबी, दुख, सुख, अच्छी बुरी तक़दीर सब उसी की क़ुदरत में है।

नोटः- उसने इन्सानों की हिदायत के लिये अपने नबियों और रसूलों को भेजा है।

अम्बिया अ़लैहुमुस्सलाम

यानी ख़ुदा तआ़ला के नबियों और रसूलों के साथ मुसलमानों को क्या अ़क़ीदे रखने चाहिये।

सवालः- रसूल अल्लाह तआ़ला के बरगुज़ीदा (चुने हुए) और चहीते बन्दे होते हैं। अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों तक अहकाम पहुंचाने के लिये रसूलों को दुनिया में भेजता है। वह जो कुछ कहते हैं, सच कहते हैं। कभी झूट नहीं बोलते। अल्लाह तआ़ला का पूरा-पूरा पैग़ाम बन्दों तक पहुंचाते हैं, न उसमें कमी करते हैं न ज़्यादती करते हैं, अल्लाह तआ़ला अपने रसूलों से मोअ्जेज़ा ज़ाहिर फ़रमाता है।

सवाल :- मोअ्जेज़ा क्या है।

जवाब :- नबी और रसूल का वह बुलन्द काम जो इन्सानी आदत के ख़िलाफ़ हो वह मोअ्जेज़ा है।

सवालः- कोई मिसाल देकर समझायें?

जवाबः- जैसे हमारे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चाँद के दो टुकड़े कर दिये या आप के इशारे पर डूबा हुआ सूरज पलट आया, या अपनी उंगलियों की घाईयों से पानी के चश्मे (सोता) बहा दिये वग़ैरह वग़ैरह।

सवालः- मोअ्जेज़ा और करामत में क्या फ़र्क़ है?

जवाबः- अगर ऐसे ही कोई बुलन्द काम अल्लाह के वली से होजाये जो इंसान की आ़दत के ख़िलाफ़ हो तो उसको करामत

कहते हैं। (मोअ्जेज़ा नबी और रसूल से ज़ाहिर होता है और करामत वली से) जैसे हुज़ूर सय्यदना सरकार गौसुल आज़म ने मुर्दे को ज़िन्दा कर दिया या सुल्तानुल हिन्द सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की खड़ाऊँ हवा में उड़ी और जयपाल जोगी को लेकर आयी।

सवाल:– क्या कोई आदमी अपनी मशक़्क़त और इबादत से नबी बन सकता है?

जवाब:– हरगिज़ नहीं नबुव्वत और रिसालत अल्लाह की देन है, वह जिसको चाहता है अता फ़रमाता है, उसमें अपनी कोशिश का दख़ल नहीं। (नबुव्वत को कसबी मानना कुफ़्र है)

सवाल:– अच्छा यह तो बताइये क्या कोई उम्मती अमल में अपने नबी से बढ़ सकता है?

जवाब:– नहीं, उम्मती अमल में नबी से बढ़ नहीं सकता, ख़्वाह कितनी ही इबादत करे (जो ऐसा अक़ीदा रखे कि उम्मती अमल में नबी से बढ़ सकता है वह गुमराह और बे–दीन है)।

सवाल:– क्या किसी का इल्म हमारे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादा है?

जवाब:– नहीं। अल्लाह तआला के बाद सबसे ज़्यादा आप ही का इल्म है।

सवाल:– दुनिया में कितने नबी और रसूल आये?

जवाब:– इस का सही इल्म अल्लाह तआला को है। अलबत्ता हमारा अक़ीदा यह है कि अल्लाह तआला ने जितने भी नबी और रसूल भेजे हम उन सब को बरहक़ और नबी और रसूल मानते हैं ख़्वाह उनकी तादाद एक लाख चौबीस हज़ार हो या दो लाख

चौबीस हज़ार हो या इससे कम या ज़्यादा हो।

सवाल:– क्या हमारे पैगम्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ैब की बातें भी जानते थे?

जवाब:– जी हां।

सवाल:– क्या वह यह भी जानते थे कि बारिश कब होगी?

जवाब:– जी हां। इसके इलावा बारिश आपके हुक्म से हुई और आप के हुक्म से बन्द हुयी। अल्लाह तआला ने बारिश को आपके ताबेअ़ कर दिया है।

सवाल:– क्या रसूले खुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह भी जानते थे कि फलाँ शख़्स की आमदनी कल क्या होगी?

जवाब:– जी हां अल्लाह के बताने से आप यह भी जानते थे।

सवाल:– क्या पैगम्बरे इस्लाम यह भी जानते थे कि माँ के पेट में क्या है?

जवाब:– जी हां।

सवाल:– क्या रसूले खुदा यह भी जानते थे कि कौन कब मरेगा और कहां मरेगा।

जवाब:– जी हां, जंगे बद्र में आपने फ़रमाया कि अबू जहल यहां मारा जायेगा और फलाँ काफ़िर यहां मारा जायेगा, चुनांचे वैसे ही हुआ जैसा कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया था।

सवाल:– क्या रसूले खुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह भी जानते थे कि क़ियामत किस दिन आयेगी?

जवाब:– जी हां। क़ियामत किस दिन आयेगी और क़ियामत में क्या क्या होगा सब कुछ जानते थे। और अगर न जानते तो

कियामत की बातें किस तरह बताते। पैग़म्बरे इस्लाम ने फ़रमाया है कि क़ियामत मुहर्रम की दसवीं तारीख़ जुमा के दिन होगी।

सवालः- सबसे पहले और सबसे आख़िरी पैग़म्बर कौन हैं?

जवाबः- सबसे पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और सब से आख़िर में हमारे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं, अब आपके बाद कोई नबी व रसूल न आयेगा। आप की इ़ज़्ज़त तमाम नबियों से अफ़ज़ल है। अब अगर कोई नबुव्वत का दावा करे तो वह झूटा है या कोई यह कहे कि आप के बाद नबी आ सकते हैं तो वह शख़्स .क़ुरआन मजीद का इन्कार करता है।

सवालः- क्या नबी व रसूल मासूम होते हैं?

जवाबः- जी हां।

सवालः- मासूम होने से क्या मुराद है?

जवाबः- मासूम होने से मुराद यह है कि गुनाहे सग़ीरा या गुनाहे कबीरा क़स्दन या सह्वन (जान बूझ कर या भूल चूक से) उन से ज़ाहिर नहीं हो सकता।

सवालः- क्या सहाबीए रसूल और अहले बैत को भी मासूम कह सकते हैं?

जवाबः- जी नहीं।

आसमानी किताबें

सवालः- आसमानी किताबें किसे कहते हैं?

जवाबः- ख़ुदा तआ़ला ने अपने रसूलों पर जितनी किताबें उतारी हैं उन्हीं को असमानी किताबें कहते हैं।

सवाल:- खुदा तआला की किताबें कितनी हैं?

जवाब:- इस का सही इल्म अल्लाह तआला को है, अलबत्ता चार किताबें बहुत मशहूर हैं।

सवाल:- उन चार किताबों का क्या नाम है और किन–किन पैग़म्बरों पर नाज़िल हुई?

जवाब:- (1) **तौरेत**- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई।

(2) **ज़ुबूर**- हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई।

(3) **इन्जील**- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई।

(4) **क़ुरआन मजीद**- हमारे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई।

सवाल:- सहीफ़ा और किताब में क्या फ़र्क है?

जवाब:- बड़ी किताबों को किताब और छोटी को सहीफ़ा कहते हैं।

सवाल:- सहीफ़े कितने हैं और किन किन पैग़म्बरों पर नाज़िल हुये?

जवाब:- सहीफ़ों की सही तादाद तो मालूम नहीं कुछ सहीफ़े हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर और कुछ सहीफ़े हज़रत शीस अलैहिस्सलाम पर और कुछ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुये।

सवाल:- क्या क़ुरआन मजीद के साथ हर आसमानी किताब पर ईमान लाना ज़रूरी है?

जवाब:- जी हां ईमान सब पर लाया जायेगा लेकिन अब तो अमल क़ुरआन मजीद ही पर किया जायेगा। दीने इस्लाम दीने

नासिख़ (मिटाने वाला) बन कर आया है।

सवालः– क्या क़ुरआन मजीद की हर–हर आयत पर ईमान लाना जरूरी है?

जवाबः– जी हां।

सवालः– अगर कोई शख़्स क़ुरआन मजीद की किसी आयत का इन्कार करता है तो उसे क्या कहा जायेगा?

जवाब :– काफ़िर।

मलाइका यानी फ़रिश्तों का बयान

सवालः– फरिश्ते किसे कहते हैं?

जवाबः– फरिश्ते अल्लाह तआला की एक मख़लूक़ हैं नूर से पैदा हुए। वह न मर्द हैं न औरत हमारी निगाहों से ग़ाइब हैं। अल्लाह तआला ने उन्हें जिस काम पर मुकर्रर कर दिया उसी में लगे रहते हैं। वह ख़ुदा की नाफ़रमानी और गुनाह नहीं करते।

सवालः– फ़रिश्ते कितने हैं?

जवाबः– इसका सही इल्म अल्लाह तआला को है। अलबत्ता अल्लाह तआला के चार फरिश्ते बहुत मशहूर हैं।

सवालः– वह चार फरिश्ते कौन–कौन से हैं?

जवाबः– (1) हजरत जिबरील अलैहिस्सलाम– जिन्होंने अल्लाह तआला की किताबों और उसके अहकाम को पैग़म्बरों तक पहुंचाया।

(2) हजरत इसराफील अलैहिस्सलाम– जो क़ियामत में सूर फूकेंगे।

(3) हजरत मीकाईल अलैहिस्सलाम– जो बारिश और मख़लूक़

को रोज़ी पहुंचाने पर मुक़र्रर है।

(4) हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम– जो मख़लूक़ की जान निकालने पर मामूर हैं।

सवाल:– जो फ़रिश्ते क़ब्र में सवाल करते हैं उनका क्या नाम है?

जवाब:– उनका नाम मुनकर नकीर है, (एक का नाम मुनकर दूसरे का नाम नकीर है)।

सवाल:– जो फ़रिश्ते लोगों का हिसाब किताब लिखते हैं उनका क्या नाम है?

जवाब:– उनको किरामन कातिबीन कहते हैं।

सवाल:– क्या फ़रिश्ते ज़मीन पर भी आते हैं?

जवाब:– जी हां, रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मज़ार शरीफ़ पर रोज़ाना सुबह से शाम तक हज़ारों फ़रिश्ते दुरूद व सलाम पढ़ने के लिए हाज़िर होते हैं।

सवाल:– जिन्न कौन हैं?

जवाब:– यह भी अल्लाह तआला की एक मख़लूक़ है जो आग से पैदा की गई है। वह हमें नज़र नहीं आते, उनमें मर्द भी हैं और औरत भी और उन्हें औलाद भी होती है। ख़ुदा तआला ने उन्हें ताक़त दी है कि वह अपने को मुख़तलिफ़ शक्ल में बदल लेते हैं, जिन्न मुसलमान भी हैं और काफ़िर भी। फ़रिश्ते नूर से पैदा किये गए हैं और जिन्न आग से।

तक़दीर का बयान

सवालः– तक़दीर किसे कहते हैं?

जवाबः– मख़लूक़ की नेकी, अच्छाई, बुराई और उसकी तमाम चीज़ों के मुताबिक़ ख़ुदा के इल्म में एक तफ़सील है और हर चीज़ के पैदा करने से पहले ख़ुदा तआला उसे जानता है। ख़ुदा तआला के इसी तफ़सीली इल्म को तक़दीर कहते हैं, कोई अच्छी बुरी बात अल्लाह तआला के इल्म से बाहर नहीं।

क़ब्र का बयान

सवालः– जब आदमी की लाश को क़ब्र में रख दिया जाता है तो उसके बाद क्या होता है?

जवाबः– क़ब्र में दो फ़रिश्ते आते हैं और उस से सवाल करते हैं।

सवालः– वह दोनों फ़रिश्ते कौन हैं?

जवाबः– मुनकर, नकीर।

सवालः– मुनकर नकीर किस शक्ल व सूरत के होते हैं?

जवाबः– काले रंग, नीली आँख, डराऊनी शक्ल जिनको देख कर ख़ौफ़ और दहशत मालूम होती है।

सवालः– क़ब्र में मुनकर नकीर क्या क्या सवाल करते हैं?

जवाबः– पहला सवाल *मन् रब्बु–क* यानी तुम्हारा रब कौन है?

दूसारा सवाल *मा दीनु–क* यानी तुम्हारा दीन क्या है।

तीसरा सवाल *मा त.कूलु फ़ी शानि हाज़र रजुलि* यानी तुम क्या कहते हो इस मर्द की शान में।

सवालः- फिर उसके बाद क्या होता है?

जवाबः- अगर वह सही जवाबात न देगा तो उस पर अज़ाबे कब्र मुसल्लत (लागू) कर दिया जायेगा।

सवालः- सही जवाबात क्या हैं?

जवाबः- पहले सवाल का जवाब यह है "मेरा रब अल्लाह है" और दूसरे सवाल का जवाब यह है कि "मेरा दीन, "दीने इस्लाम है"। और तीसरे सवाल का जवाब यह है कि "यह हमारे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।"

सवालः- अगर सही जवाबात दे दिये गये तो क्या होगा?

जवाबः- उसको आराम से मीठी नींद सुला दिया जायेगा यहां तक कि वह मैदाने हश्र में उठाया जायेगा।

सवालः- क्या रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब की क़ब्र में तशरीफ़ लाते हैं?

जवाबः- जी हां।

सवालः- सारी दुनिया में एक ही वक़्त में लाखों आदमियों को दफ़न किया जाता है तो क्या एक ही वक़्त में रसूले खुदा हर जगह तशरीफ़ लाते हैं?

जवाबः- अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल व करम से आप को ऐसी क़ुदरत बख़्शी है कि एक ही वक़्त में रसूले खुदा हर जगह तशरीफ़ ला सकते हैं।

सवालः- अच्छा यह बताइये कि क़ब्रों में भी नेअमतें मिला करतीं हैं अगर मिलती हैं तो किन को?

जवाबः- अम्बिया और औलिया को क़ब्रों में नेअमतें मिला करती हैं।

सवालः- क्या क़ुरआन ख़्वानी, सदक़ा, ख़ैरात वग़ैरह का सवाब मुर्दों को पहुंचता है?

जवाबः- ज़रूर पहुंचता है।

सवालः- अगर किसी मुर्दे को जला कर राख कर दिया गया या उसको जानवरों ने खा लिया तो उस पर अज़ाब होगा या नहीं?

जवाबः- ज़रूर अज़ाब होगा। अल्लाह तआला उसके बदन को अपनी क़ुदरत से पैदा करके उस पर अज़ाब करता है (बशर्ते कि वह अज़ाब का हकदार हो।)

सवालः- जब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद व सलाम भेजा जाता है तो क्या आप उस को सुनते हैं?

जवाबः- जी हां सुनते हैं (चाहे करीब से दुरूद व सलाम भेजा जाये या दूर से) दोनों सुनते हैं।

अलामाते क़ियामत

(यानी क़ियामत की निशानियों का बयान)

सवालः- क़ियामत की निशानियाँ क्या हैं?

जवाबः- सालेहीन व उलमा दुनिया से उठ जायेंगे, ज़िना, शराब खोरी, जहालत वग़ैरह की ज़्यादती होगी, अच्छे लोग पस्ती में होंगे, फ़ासिक़ व फ़ाजिर सरदार होंगे, लोग मस्जिदों में झगड़ा करेंगे, अमानत में ख़्यानत करेंगे, अदल व इन्साफ़ उठ जायेगा, ... लोग बुरा कहेंगे, हर जगह कत्ल व ग़ारतगरी होगी,

बीवी की फ़रमांबरदारी और माँ बाप पर ज़ुल्म करेंगे, ज़कात न अदा करेंगे वग़ैरह वग़ैरह।

सवाल:- क़ियामत के करीब की अलामतें क्या हैं?

जवाब:- सूरज पश्चिम से निकलेगा, याजूज माजूज की जमाअत सद्दे सिकन्दरी (दीवारे सिकन्दरी) से निकलेगी, एक चौपाया ज़ाहिर होगा जो लोगों से बात करेगा। धुवाँ ज़ाहिर होगा जिससे आसमान और ज़मीन में अंधेरा छा जायेगा, फिर चालीस दिन के बाद आसमान साफ़ होगा और दज्जाल ज़ाहिर होगा। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम आसमान से तशरीफ़ लायेंगे (इसके इलावा बहुत सारी अ़लामतें हैं।)

सवाल:- याजूज माजूज कौन हैं?

जवाब:- यह सब आदम–खोर थे। जब आदमियों को खाने लगे तो सिकन्दर ज़ुल-क़रनैन ने एक बहुत मुस्तहकम (मज़बूत) दीवार दो पहाड़ों के दर्मियान (बीच) क़ाइम करके उन लोगों को बन्द कर दिया। यह लोग एक सौ बीस गज़ के लम्बे चौड़े होते हैं।

सवाल:- दज्जाल कैसा होगा?

जवाब:- दज्जाल एक आँख का काना होगा, गधे पर सवार होगा, उसकी पेशानी पर काफ़िर लिखा होगा, ख़ुदाई का दावा करेगा, मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ के इलावा पूरी ज़मीन का गश्त (दौरा) करेगा जो उसको ख़ुदा कहेगा उसको छोड़ देगा वरना क़त्ल कर देगा।

सवाल:- दज्जाल कहां से निकलेगा?

जवाब:- ख़ुरासान (ईरान) से।

सवालः- चालीस दिन के बाद दज्जाल कहां जायेगा?

जवाबः- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उसको क़त्ल करेंगे।

सवालः- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तो आसमान पर हैं वह किस तरह दज्जाल को क़त्ल करेंगे?

जवाबः- दज्जाल के ज़ाहिर होने पर हाकिमे आदिल बन कर ज़ाफ़रानी लिबास पहने ज़मीन पर तशरीफ़ लायेंगे।

सवालः- इमाम मेहदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ज़ुहूर पहले होगा या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से पहले तशरीफ़ लायेंगे?

जवाबः- इमाम मेहदी का ज़ुहूर पहले होगा।

सवालः- इमाम मेहदी का ज़ुहूर दज्जाल से कितने पहले होगा?

जवाबः- सात साल पहले होगा।

सवालः- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कहां दफ़न किये जायेंगे?

जवाबः- सरकारे दो–आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़–ए–मुबारक में।

सवालः- याजूज माजूज की जमाअ़त दुनिया में क्या फसाद मचाएगी?

जवाबः- जिसको पायेगी नोच खायेगी। बड़े–बड़े दरिया का पानी ख़ुश्क कर देगी। आसमान पर तीर चलायेगी।

सवालः- याजूज माजूज का ज़ाहिर होना दज्जाल से पहले होगा या बाद में?

जवाबः- इमाम मेहदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वफात

और दज्जाल के क़त्ल के बाद होगा।

क़ियामत का बयान

सवाल:- क़ियामत किस दिन को कहते हैं?

जवाब:- जिस दिन हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम सूर फूकेंगे उसी दिन को क़ियामत कहते हैं।

सवाल:- सूर फूंकने से क्या होगा?

जवाब:- सूर फूंकने से यह होगा कि तमाम आदमी और हर जानदार मर जायेंगे, सारी दुनिया फ़ना (ख़त्म) हो जायेगी, पहाड़ रुई के गालों की तरह उड़ते फिरेंगे, सितारे टूट कर गिर पड़ेंगे यहां तक कि तमाम चीज़ें टूट फूट कर फ़ना (ख़त्म) हो जायेंगी।

सवाल:- सूर किस तरह की चीज़ है?

जवाब:- सींग की शक्ल की एक चीज़ है।

सवाल:- सूर कितनी मर्तबा फूंका जायेगा और किस लिये फूंका जायेगा?

जवाब:- तीन मर्तबा फूंका जायेगा। पहली मर्तबा तमाम ज़िन्दा बेहोश हो जायेंगे, ज़मीन कांपने लगेगी आसमान बहने लगेंगे, पहाड़ उड़ने लगेंगे, चाँद सूरज धुंधले हो जायेंगे और चालीस रोज़ तक ऐसा ही रहेगा। फिर दूसरी मर्तबा जब सूर फूंका जायेगा तो सब हलाक (मर) हो जायेंगे और क़ियामत आ जायेगी।

सवाल:- क़ियामत किस दिन आयेगी?

जवाब:- मुहर्रम की दसवीं तारीख़ जुमे के दिन आयेगी।

मरने के बाद जीना

सवाल:- मरने के बाद ज़िन्दा होने से क्या मतलब है?

जवाब:- क़ियामत में हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम जब दो मर्तबा सूर फूंकेंगे तो तमाम चीज़ें फ़ना हो जायेंगी। फिर तीसरी मर्तबा सूर फूंकेंगे तो सब लोग हिसाब किताब के लिये ज़िन्दा किये जायेंगे और उनका हिसाब किताब लिया जायेगा। अल्लाह तआला के सामने सबकी पेशी होगी और हर शख़्स को अच्छे बुरे कामों का बदला दिया जायेगा। उसी दिन को यौमुल हश्र, यौमुल जज़ा, यौमुद्दीन और यौमुल हिसाब कहते हैं।

सवाल:- हिसाब किस तरह होगा?

जवाब:- दुनिया में हर शख़्स की नेकी बदी को फ़रिश्ते लिखते हैं मैदाने हश्र में वही दफ़्तर पेश कर दिया जायेगा।

सवाल:- जो फ़रिश्ते नेकी लिखते हैं उनका क्या नाम है?

जवाब:- उनको किरामन कातिबीन कहते हैं। हर इन्सान के साथ दो फ़रिश्ते रहते हैं एक नेकी लिखता है दूसरा बदी।

सवाल:- नामए आमाल किस तरह दिया जायेगा?

जवाब:- मोमिन को सामने से दायें हाथ में और काफ़िर को पीछे से बायें हाथ में।

सवाल:- क्या अमल तौला भी जायेगा?

जवाब:- जी हाँ।

सवाल:- किस तरह तौला जायेगा?

जवाब:- जिस तरह दुनिया में वज़नी चीज़ें तौली जाती हैं। ऐसे ही मैदाने हश्र में मीज़ान (तराज़ू) पर इन्सान का नामए आमाल

तौला जायेगा।

शफ़ाअ़त का बयान

सवाल:– शफ़ाअ़त किसे कहते हैं?

जवाब:– गुनाहों की माफ़ी और दर्जात की बुलन्दी के लिये दरबारे इलाही में अर्ज़ करने को शफ़ाअ़त कहते है।

सवाल:– क्या अम्बिया अलैहिमुस्सलाम गुनहगार मुसलमानों की शफ़ाअ़त करेंगे?

जवाब:– ज़रूर करेंगे।

सवाल:– क्या नबी के इलावा दूसरों को भी सिफ़ारिश करने की इजाज़त होगी?

जवाब:– हां औलिया–ए–किराम, उलमा, शोहदा, सोलहा को भी गुनहगार मुसलमानों के हक़ में सिफ़ारिश करने की इजाज़त होगी?

सवाल:– सबसे पहले शफ़ाअ़त कौन करेंगे?

जवाब:– सरकारे दो–आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और सबसे पहले आप ही की शफ़ाअ़त क़बूल की जायेगी।

सवाल:– गुनाहगारों की शफ़ाअ़त का मामला कहां से साबित है?

जवाब:– क़ुरआन मजीद और हदीस शरीफ़ से।

सवाल:– शफ़ाअ़ते कुबरा किसको हासिल होगी?

जवाब:– हमारे आक़ा व सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को।

सवाल:– पुल–सिरात से काफ़िर और मोमिन दोनों गुज़रेंगे

जवाब:- दोनों गुज़रेंगे लेकिन मोमिन पार कर जायेंगे और काफ़िर जहन्नम में गिर जायेगा।

सवाल:- पुल–सिरात किस पर क़ाइम होगा?

जवाब:- दोज़ख़ पर मगर जब जन्नती गुज़रेंगे तो उनके लिये आग ठंडी हो जायेगी।

दोज़ख़ का बयान

सवाल:- दोज़ख़ क्या है?

जवाब:- गुनहगारों को सज़ा देने के लिये परवरदिगारे आलम ने जो आग भड़का रखी है उसी को दोज़ख़ या जहन्नम कहते हैं।

सवाल:- दोज़ख़ के कुल कितने तबक़े हैं?

जवाब:- सात तबक़े हैं।

सवाल:- दोज़ख़ की आग का रंग कैसा है?

जवाब:- काला, हज़ार बरस रौशन की गई तो लाल हो गयी, फिर हज़ार बरस रौशन की गयी तो सफ़ेद हो गयी। फिर हज़ार बरस रौशन की गयी तो काली हो गयी वही स्याही क़ाइम है।

सवाल:- दोज़ख़ की गहराई किस क़दर है?

जवाब:- अगर कोई पत्थर दोज़ख़ की आग के ऊपर रख दिया जाये और वह पत्थर तेज़ी से नीचे को चले तो तह तक सत्तर बरस में पहुंचेगा।

सवाल:- दोज़ख़ी का लिबास क्या होगा?

जवाब:- कुर्ता गन्धक या अलकतरा का होगा कि आग लगते

ही ख़ूब दहकेगा या पिघले हुए तांबे का होगा और ओढ़ना बिछौना आग का होगा।

सवाल:- दोज़ख़ की आग की तेज़ी दुनिया की आग से कितनी ज़्यादा है?

जवाब:- सत्तर गुना ज़्यादा है।

सवाल:- क्या दोज़ख़ी एक दूसरे को देखेंगे?

जवाब:- दोज़ख़ में इस क़दर तारीकी होगी कि कोई किसी को न देख सकेगा। और आपस में एक दूसरे को नोच खाएगा।

सवाल:- दोज़ख़ का सबसे मामूली अज़ाब क्या होगा?

जवाब:- दोज़ख़ी को आग का जूता पहनाया जायेगा जिस का तसमा भी आग ही का होगा। उस जूते को पहनने से दिमाग़ इस क़दर खौलेगा कि जैसे चूल्हे पर हांडी या कढ़ाई में तेल खौलता है।

जन्नत का बयान

सवाल:- जन्नत क्या है?

जवाब:- जन्नत एक मकान है कि अल्लाह तआला ने ईमान वालों के लिये बनाया है।

सवाल:- जन्नत के कुल कितने तबके हैं?

जवाब:- आठ।

सवाल:- जन्नत किस चीज़ से बनी है?

जवाब:- जन्नत की इमारत में एक ईंट सोने की एक ईंट, चाँदी की, गारा मुश्क का, मिट्टी ज़ाफ़रान की और कंकड़ियाँ मोती

सवाल:– जन्नती की ज़बान क्या होगी?

जवाब:– अ़रबी ज़बान होगी।

सवाल:– क्या जन्नती बूढ़े होंगे?

जवाब:– नहीं।

सवाल:– क्या जन्नती बीमार होंगे?

जवाब:– नहीं।

सवाल:– जन्नती का लिबास क्या होगा?

जवाब:– आला दर्जे का रेशमी बारीक व मोटा सब्ज़ लिबास होगा वह कभी न पुराना होगा और न फटेगा।

सवाल:– क्या जन्नत में अल्लाह तआ़ला का दीदार होगा?

जवाब:– ज़रूर होगा।

सवाल:– क्या जन्नत में पेशाब और पाख़ाने की भी ज़रूरत होगी।

जवाब:– नहीं थूकने खँखारने की भी ज़रूरत न पड़ेगी।

सवाल:– क्या ऐसे लोग जो कलिमा पढ़ने के बावजूद पैग़म्बरे इस्लाम की तौहीन करते हैं वह भी जन्नत में जायेंगे।

जवाब:– हरगिज़ नहीं। ऐसे लोगों की नमाज़ और रोज़े को उनके मुँह पर फेंक दिया जायेगा जैसा कि क़ुरआन मजीद में आया है कि ऐसे लोगों के आमाल को मलिया–मेट कर दिया जायेगा।

सवाल:– मुसलमान के बच्चे कहाँ रहेंगे?

जवाब:– जन्नत में।

सवाल:– कुफ़्फार के बच्चे कहाँ रहेंगे?

जवाब:– जन्नत में मोमिनीन के ख़ादिम बनाये जायेंगे।

औलिया-अल्लाह और सहाबा का बयान

सवालः- सहाबा किसे कहते हैं?

जवाबः- सहाबी उस शख़्स को कहते हैं जिसने ईमान की हालत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को देखा हो और उसी ईमान पर उसका इन्तेक़ाल हुआ हो।

सवालः- सहाबा में सबसे अफज़ल सहाबी कौन हैं?

जवाबः- अबू बकर सिद्दीक़ (पहले ख़लीफ़ा) उमर फ़ारूक़ (दूसरे खलीफा) उसमान ग़नी (तीसरे ख़लीफ़ा) अली मुर्तज़ा (चौथे ख़लीफ़ा) रज़ियल्लाहु अन्हुम।

इन लोगों का मर्तबा तमाम सहाबा से अफ़ज़ल है। और इन्हीं चारों को खुलफ़ाए अरबआ, ख़ुलफ़ाए राशिदीन और चार यार भी कहते हैं।

सवालः- वली किसे कहते हैं?

जवाबः- खुदा तआ़ला के ऐसे बरगुज़ीदा और मुकर्रब बन्दे जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक्म पर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और हमेशा सुन्नत व उसके

जवाब:– हरगिज़ नहीं।

सवाल:– क्या औलिया–ए–किराम के मज़ारात पर फ़ातिहा या उर्स के लिये हाज़िर होना दुरुस्त है (ठीक है)?

जवाब:– जी हां, दुरुस्त है। औलिया–ए–किराम के दरबार में बहुत से फ़ुयूज़ और बरकतें मिलती हैं।

सवाल:– क्या औलिया–ए–किराम के मज़ारात पर गुम्बद बनाना और उनकी क़ब्र पर चादर डालना या चराग़ जलाना यह सब बातें दुरुस्त हैं?

जवाब:– बेशक यह तमाम बातें दुरुस्त हैं। इसकी वजह से औलिया–ए–किराम की अज़मत व बुज़ुर्गी का इज़हार होता है।

सवाल:– क्या कोई वली जो सहाबी नहीं है वह सहाबी के बराबर हो सकता है?

जवाब:– नहीं।

कुफ़्र व शिर्क व बिदअ़त का बयान

सवाल:– कुफ़्र किसे कहते हैं?

जवाब:– ज़रूरियाते दीन यानी जिन चीज़ों पर ईमान लाना ज़रूरी है उनमें से किसी एक का इन्कार करना कुफ़्र है। जैसे खुदा तआला को न मानना, या फ़रिश्तों को न मानना या आसमानी किताबों को न मानना या तक़दीर का इन्कार करना वग़ैरह।

सवाल:– शिर्क किसे कहते हैं?

जवाब:– अल्लाह तआला की ज़ात या सिफ़ात में किसी दूसरे को शरीक करने को शिर्क कहते हैं।

सवाल:– खुदा तआला की ज़ात में शरीक करने का क्या

मतलब है?

जवाब:- यानी अल्लाह तआला के इलावा और भी किसी को ख़ुदा मानना जैसे ईसाई तीन ख़ुदा मानते हैं, आग के पूजने वाले दो ख़ुदा मानते हैं और हिन्दू बहुत से ख़ुदा मानते हैं। ऐसे लोगों को मुशरिक कहते हैं।

सवाल:- और ख़ुदा तआला की सिफ़ात में दूसरे को शरीक करने से क्या मुराद है?

जवाब:- अल्लाह तआला की किसी सिफ़त को दूसरों में इस तरह मानना कि यह सिफ़त अल्लाह के बग़ैर दिये हुये उसको हासिल है इसी को शिर्क फ़िस्सिफ़ात कहते हैं।

सवाल:- मिसाल देकर समझाइये?

जवाब:- जैसे ये कहना कि फ़लां शख़्स पानी बरसा सकता है बग़ैर अल्लाह के हुक्म के या यह कहना कि फ़लां शख़्स ग़ैब जानता है बग़ैर अल्लाह के बताये हुये, ऐसी बातों को शिर्क फ़िस्सिफ़ात कहते हैं।

नोट:- लेकिन अगर इस तरह कहा जाये कि सरकारे दोआलम पानी बरसाते थे अल्लाह के हुक्म से, हुज़ूर ग़ैब जानते थे अल्लाह के बताने से, हुज़ूर मुर्दों को जिन्दा कर देते थे अल्लाह की तौफ़ीक़ से, हुज़ूर लोगों की मुरादें पूरी करते थे अल्लाह की दी हुई क़ुदरत से, तो यह बातें शिर्क नहीं हैं। ऐसा अक़ीदा रखना दुरुस्त (ठीक) है और यही सही अक़ीदा है। या ऐसा कहना कि अल्लाह तआला की बख़्शी हुई ताक़त से हुज़ूर दूर और नज़दीक की बातें सुन लेते हैं, हमारी मदद फ़रमाते हैं तो यह तमाम बातें दुरुस्त हैं। इसको शिर्क नहीं कहते हैं।

जवाबः– जो सुन्नत के [illegible] हो उसको बिदअते सैय्येआ कहते हैं।

सवालः– और बिदअते हसना किसे कहते हैं?

जवाबः– जो सुन्नत की ज़िद न हो।

सवालः– बिदअते हसना की मिसाल देकर समझाइये?

जवाबः– जैसे मीलाद शरीफ़ करना, महफ़िले मीलाद में खड़े होकर सलाम व क़ियाम करना। औलिया–ए–किराम का उर्स करना, उनके मज़ारात पर गुम्बद बनाना, उनकी क़ब्र पर चादर डालना, उनके रौज़ा में चराग़ जलाना, ताकि उनकी अ़ज़मत और बुज़ुर्गी का इज़हार हो। यह तमाम चीज़ें बिदअ़ते हसना हैं, बिदअ़ते हसना का करने वाला सवाब का हक़दार होता है।

सवालः– जो शख़्स बिदअ़ते हसना का इन्कार करे वह कैसा है?

जवाबः– गुमराह है।

नोटः– जिन चीज़ों को रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नाजाइज़ नहीं फ़रमाया ऐसी चीज़ों को नाजाइज़ कहना या जिन चीज़ों से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना नहीं फ़रमाया उन चीज़ों से लोगों को मना करना यह दीन में ज़्यादती और गुमराही की निशानी है।

सवालः– बिदअ़त की दो क़िस्में कहां से साबित हैं?

जवाबः– हदीस शरीफ़ से। हमारे आक़ा व सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक बिदअ़त को बिदअ़ते सैय्येआ फ़रमाया है और दूसरी बिदअ़त को बिदअ़ते हसना। बिदअ़ते सैय्येआ को गुमराही क़रार दिया है और उसके ईजाद करने वाले और उस पर अमल करने वाले को मुस्तहिक़े अ़ज़ाब फ़रमाया है।और बिदअ़ते हसना के ईजाद करने वाले और उस पर अमल करने वाले को मुस्तहिक़े सवाब फ़रमाया है।

नोटः– अल्लाह तआ़ला हम को सीधी राह दिखाये और अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बताये हुये हुक्म पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन०

नज़्र और मन्नत, मुराद का बयान

सवालः– मन्नत मानना कैसा है?

जवाबः– जाइज़ है।

सवालः– और मन्नत का पूरा करना कैसा है?

जवाबः– ज़रूरी है।

सवालः– क्या हर मन्नत का पूरा करना ज़रूरी है।

जवाब:- नहीं। बल्कि ऐसी मन्नत जो ख़िलाफ़े शरीअत न हो उसका पूरा करना ज़रूरी है। और जो मन्नत शरीअत के ख़िलाफ़ हो उसका पूरा करना नाजाइज़ है।

सवाल:- क्या मस्जिद में चराग़ जलाने या किसी पीर या वली से मन्नत मानना मना है?

जवाब:- नहीं। जैसे मस्जिद में चराग़ जलाने या ताक़ भरने या फलां बुज़ुर्ग के मज़ार पर चादर चढ़ाने या ग्यारहवीं शरीफ़ की नियाज़ (फ़ातिहा) दिलाने या सय्यदिना सरकार ग़ौसुल आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का तोशा या सय्यदिना सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नियाज़ या शाह अब्दुल हक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का तोशा करने या हज़रत जलाल बुख़ारी का कूंडा करने या मुहर्रम की फ़ातिहा, या शरबत; या खिचडा, या सबील लगाने, या मीलाद शरीफ करने की मन्नत मानी तो यह शरअी मन्नत नहीं मगर यह काम मना नहीं है, करे तो अच्छा है, अलबत्ता इसका ख़्याल रहे कि कोई बात ख़िलाफ़े शरअ़ उस के साथ न मिलायें। और ज़ो लोग इन बातों से मना करते हैं वह नेकियों से महरूम हैं।

शरीअ़त के इस्तिलाहात

सवाल:- फर्ज़ की क्या तारीफ है यानी फ़र्ज़ किस को कहते हैं?

जवाब:- फ़र्ज उसे कहते हैं जिसकी दलालत (दलील) और सुबूत क़तअ़ी हो यानी उसमें कोई शक न हो इसी लिये उसका इन्कार करने वाला काफ़िर हो जाता है। और बग़ैर किसी उज़्र

(मजबूरी) के छोड़ने वाला गुनहगार और मुस्तहिके अज़ाब होता है।

सवाल:- वाजिब किसे कहते हैं?

जवाब:- जो दलीले ज़न्नी से साबित हो उसको वाजिब कहते हैं, उसका इनकार करने वाला काफ़िर नहीं होता। अलबत्ता बग़ैर उज़्र के छोड़ने वाला फ़ासिक़ (गुनहगार) और अज़ाब का मुस्तहिक़ (हक़दार) होता है।

सवाल:- सुन्नत किसे कहते हैं?

जवाब:- उस काम को कहते हैं जिसको रसूले खुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम या सहाबए किराम ने किया हो या करने का हुक्म फ़रमाया हो।

सवाल:- नफ़्ल किसे कहते हैं?

जवाब:- जिसकी फ़ज़ीलत (बुज़ुर्गी, बड़ाई) शरीअ़त में साबित हो उनके करने में सवाब हो और छोड़ने में अज़ाब न हो और इसको मुस्तहब भी कहते हैं।

सवाल:- फ़र्ज़ की कितनी क़िस्में हैं?

जवाब:- फ़र्ज़ की दो क़िस्में हैं।

(1) फ़र्ज़े ऐ़न। (2) फ़र्ज़े किफ़ाया।

सवाल:- फ़र्ज़े ऐ़न किसे कहते हैं?

जवाब:- जिसका अदा करना हर शख़्स पर ज़रूरी हो और बग़ैर उज़्र छोड़ने वाला फ़ासिक़ और गुनहगार हो।

सवाल:- फ़र्ज़े किफ़ाया किसे कहते हैं?

जवाब:- फ़र्ज़े किफ़ाया उसे कहते हैं जो दो एक आदमी के करने से सबके ज़िम्मे से उतर जाये और अदा न करे तो सबके सब गुनाहगार होंगे, जैसे नमाज़े जनाज़ा।

सवाल:- सुन्नत की कितनी क़िस्में हैं?

जवाब:- सुन्नत की दो क़िस्में है। सुन्नते मोअक्कदा और सुन्नते ग़ैर मोअक्कदा।

सवाल:- सुन्नते मोअक्कदा किसे कहते हैं?

जवाब:- जिस काम को रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमेशा किया हो या करने का हुक्म दिया हो ऐसी सुन्नतों को सुन्नते मुअक्कदा कहते हैं, उनको बग़ैर उज़्र छोड़ देना बुरा है।

सावल:- सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा किसे कहते हैं?

जवाब:- जिस काम को सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अक्सर व बेश्तर किया हो लेकिन कभी-कभी छोड़ भी दिया हो। ऐसी सुन्नतों को सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा कहते हैं।

सवाल:- मुस्तहब किसे कहते हैं?

जवाब:- जिसके करने में सवाब है और न करने में गुनाह नहीं।

सवाल:- हराम किसे कहते हैं?

जवाब:- हराम उसको कहते हैं, जिसकी मनाही दलीले क़तओ़ (ठोस दलील) से साबित हो और उसका करने वाला फ़ासिक़ और अज़ाब का हक़दार है और उसका इन्कार करने वाला काफ़िर है।

सवाल:- मकरूहे तहरीमी किसे कहते हैं?

जवाब:- उस काम को कहते हैं जिसकी मनाही दलीले ज़न्नी से साबित हो उसका इन्कार करने वाला काफ़िर नहीं होता मगर करने वाला गुनाहगार होता है।

सवालः- मकरूहे तन्ज़ीही किसे कहते हैं?

जवाबः- मकरूहे तन्ज़ीही उस काम को कहते हैं जिसके छोड़ने में सवाब है और करने में अज़ाब तो नहीं है मगर मअयूब बुरा है।

सवालः- मुबाह (जाइज़) किसे कहते हैं?

जवाबः- जिसका करना न करना दोनों बराबर हो, यानी करने में न तो सवाब है नहीं करने में अज़ाब व गुनाह नहीं।

सवालः- दलीले कतई किसे कहते हैं?

जवाबः- जिसका सुबूत क़ुरआन शरीफ़ और हदीस मौतवातिर से हो।

सवालः- दलील ज़न्नी किसे कहते हैं?

जवाबः- जिसका सुबूत हदीसे मशहूर से हो।

वज़ू का बयान

सवालः– वज़ू किसे कहते हैं? और उसका क्या तरीका है।

जवाबः– वज़ू का बयान शुरू में आ चुका है लिहाज़ा पहले देखा जाये।

सवालः– वज़ू में कुल कितने फर्ज़ हैं?

जवाबः– चार फ़र्ज़ हैं।

(1) पूरे मुँह का धोना यानी पेशानी के बालों से ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक। (2) दोनों हाथों को केहुनियों समेत धोना। (3) चौथाई सर का मसह करना। (4) दोनों पाँव टख़नों समेत धोना। जैसा कि क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने फ़रमाया

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ۔

या अय्युहल्लज़ी–न आमनू इज़ा क़ुम्तुम इलस्सलाति फग़्सिलू वुजू–हकुम व ऐदि–यकुम इलल् मराफ़िकि वम्–सहू बि–रऊसिकुम् व अर्‌जु–लकुम इलल् कअ़्बैनि.

तर्जुमाः– ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ का इरादा करो तो धोओ अपने चेहरों को और हाथों को कुहनियों समेत और मसह करो अपने सर का और धोओ पाँव को टख़नों समेत।

सवालः– वज़ू में कितनी सुन्नतें हैं?

जवाबः– (1) नीयत करना। (2) *बिस्मिल्लाह* पढ़ना। (3) तीन दफ़ा दोनों हाथ गट्टों तक धोना। (4) मिस्वाक करना।

(5) तीन बार कुल्ली करना। (6) तीन बार नाक में पानी डालना। (7) दाढ़ी का ख़िलाल करना। (8) हाथ पाँव की उंगलियों में ख़िलाल करना। (9) हर उज़्व (हिस्सा) को तीन बार धोना। (10) एक बार तमाम सर का मसह करना। (11) दोनों कानों का मसह करना। (12) तरतीब से वज़ू करना यानी जिस तरह क़ुरआन शरीफ़ में वज़ू का बयान आया है। (13) लगातार धोना यानी एक हिस्सा सूखने न पाये कि दूसरा हिस्सा धो डालें।

सवालः– वज़ू में मुस्तहब कितने हैं?

जवाबः– (1) गर्दन का मसह करना। (2) वज़ू के काम खुद अपने से कर लेना। (3) क़िबले की तरफ़ मुँह करके बैठना। (4) पाक और ऊँची जगह पर बैठ के वज़ू करना।

सवालः– वज़ू में कितनी चीज़ें मकरूह हैं?

जवाबः– (1) नापाक जगह पर बैठ कर वज़ू करना। (2) वज़ू में सीधे हाथ से नाक साफ़ करना। (3) दुनिया की बातें करना। (4) ख़िलाफ़े सुन्नत वज़ू करना।

सवालः– वज़ू कितनी चीज़ों से टूट जाता है?

जवाबः– आठ चीज़ों से। (1) पेशाब पाख़ाना करना, या इन दोनों रास्तों से किसी और चीज़ का निकलना। (2) हवा का ख़ारिज होना। (3) बदन के किसी जगह से ख़ून या पीप का बह जाना। (4) मुँह भर के क़ै (उल्टी) होना। (5) ग़फ़लत से सो जाना। (6) बेहोशी का तारी होना। (7) मजनूं या दीवाना होना। (8) रुकूअ और सज्दा वाली नमाज़ में क़हक़हा मार कर हंसना।

सवालः– क्या सो जाने से रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भी वज़ू टूट जाता था?

जवाब:– नहीं। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नींद हम लोगों जैसी न थी। आपकी आँखें बन्द रहतीं मगर दिल आप का बेदार रहता। आप सिर्फ़ देखने में इन्सानों जैसे थे मगर आप हक़ीक़त में नूरे मुजस्सम थे। यहां तक कि ज़मीन पर आप का साया (परछाईं) न पड़ता था। आप के बदन पर मक्खी न बैठती थी इसलिये रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने जैसा बशर न कहना चाहिये।

तयम्मुम का बयान

सवाल:– तयम्मुम कहाँ से साबित है?

जवाब:– क़ुरआन मजीद से! जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ ने फ़रमाया है।

फَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا۔

फ़लम तजिदू माअन फ़–त–यम्ममू सईदन् तय्यिबन। (यानी जब तुम लोग पानी न पाओ तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो।)

सवाल:– तयम्मुम किसे कहते हैं?

जवाब:– पाक मिट्टी या ऐसी चीज़ जो मिट्टी के हुक्म में हो उससे बदन को नजासते हुक्मिया से पाक करने को तयम्मुम कहते हैं।

सवाल:– तयम्मुम किस वक़्त जाइज़ होता है?

जवाब:– जब पानी न मिले या पानी मौजूद हो मगर उसके इस्तेमाल से मर्ज़ बढ़ जाने का अन्देशा हो या मरीज़ हो जाने का तो तयम्मुम करना जाइज़ है।

सवाल:– तयम्मुम में कितने फ़र्ज़ हैं?

जवाबः– तीन हैं। (1) नीयत करना। (2) दोनों हाथ मिट्टी पर मार कर मुँह पर फेरना। (3) दोनों हाथों को मिट्टी पर मार कर दोनों हाथों को कुहनी समेत मलना। और यही तयम्मुम करने का तरीक़ा भी है। यानी नीयत करके दोनों हाथ मिट्टी पर मार कर पूरे मुँह पर फेरें फिर दोबारा दोनों हाथ मिट्टी पर मार कर दायें हाथ को बायें हाथ से और बायें हाथ को दायें हाथ से कुहनी समेत मल लें इस तरह कि कोई हिस्सा छूटने न पाये। तयम्मुम में सर का मसह करना या पाँव पर हाथ का मलना यह सब कुछ नहीं है।

सवालः– वज़ू और ग़ुस्ल दोनों का तयम्मुम जाइज़ है या सिर्फ़ वज़ू का?

जवाबः– दोनों का तयम्मुम जाइज़ है।

सवालः– वज़ू और ग़ुस्ल दोनों का तयम्मुम एक ही तरह किया जाएगा या दोनों में फ़र्क़ है?

जवाबः– दोनों का तयम्मुम एक ही तरह है, कोई फ़र्क़ नहीं।

सवालः– तयम्मुम किन चीज़ों पर करना जाइज़ है?

जवाबः– पाक मिट्टी, पाक ग़ुबार, गर्द, रेत, पत्थर, चूना, गेरू, मुल्तानी मिट्टी, मिट्टी के कच्चे या पक्के बरतन, मिट्टी की कच्ची या पक्की ईंटें और मिट्टी, ईंट या पत्थर की दीवार वग़ैरह से तयम्मुम जाइज़ है।

सवालः– तयम्मुम किन चीज़ों से नाजाइज़ है?

जवाबः– तरीक़ा यह है कि जो चीज़ें आग में पिघल जायें या आग से जल कर ख़ाक हो जायें जैसे ग़ल्ला, कपड़ा, राख, लकड़ी, लोहा, आलमूनियम, सीसा, जस्ता, सोना, चाँदी, पीतल, ताँबा, राँगा इस तरह की चीज़ों पर नाजाइज़ है।

सवाल:– जिन चीज़ों पर तयम्मुम नाजाइज़ है अगर उन पर ग़ुबार, गर्द, हो तो तयम्मुम जाइज़ है या नहीं?

जवाब:– जाइज़ है जब कि ग़ुबार (धूल) इतना हो कि हाथ मारने से उसका असर हाथ में ज़ाहिर हो।

सवाल:– तयम्मुम किन चीज़ों से टूटता है।

जवाब:– जिन चीज़ों से वज़ू टूट जाता है। इनके इलावा जब पानी पर क़ुदरत हो गयी तब भी तयम्मुम टूट जायेगा या बीमारी की वजह से तयम्मुम किया और अब बीमारी ख़त्म हो गई हो तो भी तयम्मुम टूट जायेगा। अलबत्ता ग़ुस्ल का तयम्मुम हदसे अकबर से टूटता है।

ग़ुस्ल का बयान

सवाल:– ग़ुस्ल किसे कहते हैं?

जवाब:– ग़ुस्ल कहते हैं नहाने को इसका तरीक़ा यह है कि कुल्ली करना, नाक में पानी डालना, पूरे बदन पर पानी बहाना।

सवाल:– ग़ुस्ल में कितने फ़र्ज़ हैं?

जवाब:– तीन फ़र्ज़ हैं– (1) कुल्ली करना (2) नाक में पानी डालना (3) और पूरे बदन पर पानी बहाना, इस तरह कि बदन का कोई हिस्सा छूटने न पाये।

सवाल:– ग़ुस्ल में कितनी सुन्नतें हैं?

जवाब:– पांच हैं। (1) ग़ुस्ल से पहले इस्तिन्जा करना और उस जगह का धोना जहां पर नजासत (गन्दगी) लगी हो। (2) दोनों हाथ गट्टों तक तीन बार धोना। (3) नापाकी दूर करने की नीयत करना। (4) ग़ुस्ल से पहले वज़ू करना। (5) तमाम बदन पर तीन

बार पानी बहाना।

इस्तिन्जा का बयान

सवालः– इस्तिन्जा किसे कहते हैं?

जवाबः– पेशाब पाखाना करने के बाद जो नापाकी बदन पर लगी रहती है उसे पाक करने को इस्तिन्जा कहते हैं।

सवालः– इस्तिन्जा किस हाथ से करना चाहिये?

जवाबः– बायें हाथ से (दायें हाथ से मकरूह है)।

सवालः– इस्तिन्जा किन चीज़ों से करना चाहिये?

जवाबः– मिट्टी के पाक ढेलों से या पत्थर से या सिर्फ़ पानी से मगर ढेलों के बाद पानी से बेहतर है।

सवालः– इस्तिन्जा किन चीज़ों से मकरूह है?

जवाबः– कोयला, कागज़, कपड़ा, हड्डी, लीद, गोबर और खाने की चीज़ों से।

रोज़े का बयान

सवालः– रोज़ा क्या है?

जवाबः– रोज़ा भी अरकाने-इस्लाम का एक रुक्न है। (फ़र्ज़ है।)

सवालः– रोज़ा कहां से साबित है?

जवाबः– .कुरआन मजीद और हदीस शरीफ़ से।

सवालः– रोज़ा किसे कहते हैं?

जवाबः– नीयत के साथ सुबहे सादिक़ से सूरज डूबने तक

खाने पीने और नफ़सानी ख़्वाहिशों को छोड़ देने को रोज़ा कहते हैं।

सवालः- फ़र्ज़ रोज़े कितने हैं?

जवाबः- साल भर में एक महीने के यानी रमज़ान शरीफ़ के रोज़े फ़र्ज़ हैं।

सवालः- कौन से रोज़े सुन्नत हैं?

जवाबः- आशूरा का, अरफ़ा यानी नवीं ज़िलहिज्जा और अय्यामे बीज़ यानी हर माह की तेरहवीं, चौदहवीं, पन्द्रहवीं के रोज़े मसनून हैं। हदीस शरीफ़ में अय्यामे बीज़ के रोज़ों की बहुत फ़ज़ीलत आई है।

सवालः- क्या शरीअत में रोज़े मकरूह भी हैं?

जवाबः- जी हां। जैसे जुमेरात या सनीचर का रोज़ा मिलाये बग़ैर सिर्फ़ जुमा के रोज़ा का एहतेमाम से रखना मकरूह है।

सवालः- क्या रोज़े हराम भी हैं?

जवाबः- जी हां। साल भर में पाँच रोज़े हराम हैं। ईदुल फ़ित्र (ईद) ईदुल अज़हा (बक़र ईद) के दो रोज़े और तीन रोज़े अय्यामे तशरीक़ के हराम हैं।

सवालः- अय्यामे तशरीक़ किसे कहते हैं?

जवाबः- ज़िलहिज्जा की ग्यारहवीं, बारहवीं, तेरहवीं तारीख़ को अय्यामे तशरीक़ कहते हैं।

सवालः- किन लोगों पर रमज़ान शरीफ़ के रोज़े फ़र्ज़ हैं?

जवाबः- मुसलमान आक़िल, बालिग़, मर्द औरत पर (इस शर्त के साथ कि कोई उज़्रे शरई न हो)।

सवालः- क्या बग़ैर नीयत के रोज़ा हो जायेगा?

जवाब:- नहीं, रोज़ा के लिये नीयत शर्त है।

सवाल:- क्या ज़बान से नीयत करनी ज़रूरी है?

जवाब:- नहीं दिल से नीयत कर लेना काफ़ी है।

सवाल:- कौन—कौन सी चीज़ें रोज़े में मुस्तहब हैं?

जवाब:- (1) सहरी खाना। (2) सहरी आख़िर वक़्त में खाना। (3) रात से नीयत करना। (4) इफ़्तार में जल्दी करना। (5) छुहारे या खजूर और अगर यह न हो तो पानी से इफ़्तार करना। (6) ज़बान को बुरी बातों से बचाना।

सवाल:- अच्छा यह बताइये रोज़ा किन चीज़ों से मकरूह नहीं होता?

जवाब:- (1) मिस्वाक करना। (2) बदन पर या सर पर तेल की मालिश करना। (3) सुर्मा लगाना। (4) खुशबू सूंघना या लगाना। (5) ठन्डक के लिये गुस्ल करना। (6) बिला इरादा कै हो जाना। (7) मक्खी या धुवां का अनजाने में हलक़ से उतर जाना। (8) भूले से किसी चीज़ का खा लेना या पी लेना इन चीज़ों से रोज़ा न तो टूटता है और न तो मकरूह होता है।

ज़कात का बयान

सवाल:- ज़कात का क्या हुक्म है?

जवाब:- ज़कात भी अरकाने इस्लाम से एक रूक्न है (यानी फ़र्ज़ है)। इसका इन्कार करने वाला काफ़िर है और ज़कात का न देने वाला फ़ासिक़ और क़त्ल का मुस्तहिक़ और ज़कात की अदाइगी में देर करने वाला गुनहगार व मरदूदुश्शहादत (जिसकी गवाही न मानी जाये) है।

सवालः– ज़कात कहां से साबित है?

जवाबः– .कुरआन मजीद और हदीस शरीफ़ से।

सवालः– ज़कात किसे कहते हैं?

जवाबः– शरअ़ी कानून के मुताबिक़ माल का जो हिस्सा किसी मुहताज, फ़कीर को देकर उसे मालिक बना दिया जाता है उसी को ज़कात कहते हैं।

सवालः– क्या ज़कात हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है या उसके लिए कुछ शर्तें हैं?

जवाबः– ज़कात फ़र्ज़ होने की चन्द शर्तें हैं और वह यह हैं:– (1) मुसलमान। (2) आकिल। (3) बालिग़ (4) आज़ाद। (5) मालिके निसाब होना। (6) निसाब का हाजते असली और कर्ज़ से ज़्यादा होना। (7) मालिक होने के बाद निसाब पर एक साल का गुज़र जाना।

सवालः– इस्लामी शरीअ़त में निसाब किसे कहते हैं?

जवाबः– हमारी शरीअ़त ने जिन मालों में ज़कात फ़र्ज़ किया है, उनमें ज़कात फ़र्ज़ होने के लिये अलग–अलग एक मिक़्दार मुकर्रर कर दी है। जब इतनी मिक़्दार पूरी हो जाये तो उसको निसाब कहते हैं और ज़कात फ़र्ज़ हो जाती है।

सवालः– ज़कात किस–किस माल में फ़र्ज़ है?

जवाबः– सोना, चाँदी और हर किस्म के माले तिजारत में ज़कात फ़र्ज़ है।

सवालः– चाँदी का निसाब क्या है?

जवाबः– दो सौ दिरम यानी साढ़े बावन तोला चाँदी।

सवालः– सोने चाँदी की ज़कात में वज़न का एतेबार है या

कीमत का?

जवाब:- वज़न का एतेबार है कीमत का नहीं। यानी वज़न से मुराद वह तोला जिस से यह राइज (चालू) रुपया सवा ग्यारह माशा है।

सवाल:- सोने का निसाब क्या है?

जवाब:- सोने का निसाब बीस मिस्क़ाल है यानी साढ़े सात तोला सोना।

सवाल:- अगर सोना व चाँदी बक़दरे निसाब हो तो उस पर कितनी ज़कात फ़र्ज़ है।

जवाब:- साढ़े सात तोला सोने की ज़कात सवा दो माशा सोना है और साढ़े बावन तोला चाँदी पर एक तोला तीन माशा छः रत्ती चाँदी वाजिब है या इन दोनों की कीमत।

सवाल:- मसरफ़े ज़कात क्या है?

जवाब:- जिस शख़्स को ज़ुकात शरअ़न दी जा सकती है उसी को मसरफ़े ज़कात कहते हैं।

सवाल:- मसारिफ़े ज़कात कितने हैं?

जवाब:- (1) फ़क़ीर (2) मिस्कीन (3) क़र्ज़दार (4) मुसाफ़िर, इस्लाम के इबतिदाई ज़माने में काफ़िरों को भी ज़कात देना जाइज़ था लेकिन अब जाइज़ नहीं है?

सवाल:- फ़क़ीर और मिस्कीन में क्या फ़र्क़ है?

जवाब:- फ़क़ीर वह है जिसके पास थोड़ा सा माल व असबाब हो लेकिन निसाब के बराबर न हो। और मिस्कीन वह शख़्स है जिसके पास कुछ भी न हो। और क़र्ज़दार से वह शख़्स मुराद है जिसके पास क़र्ज़ से बचा हुआ कोई माल निसाब की

उसके बाद अपने मुहल्ले के [illegible]

का ज़्यादा फ़ाइदा हो।

सवाल:- क्या इस्लामी मदरसे को भी ज़कात दे सकते हैं?

जवाब:- हाँ, इस शर्त के साथ कि इन्तेज़ाम करने वाले मसरफ़े ज़कात में ख़र्च करें।

सवाल:- रिश्तेदार तो माँ बाप भी हैं क्या उन्हें भी ज़कात दी जा सकती है?

जवाब:- नहीं! बाप, माँ, दादा, दादी, नाना, नानी और (ऐसे ही और ऊपर तक) बेटा, बेटी, पोता, पोती, नवासा, नवासी, (ऐसे ही और नीचे तक) उन्हें ज़कात नहीं दी जा सकती है, ऐसे ही सय्यद और मालदार, और काफ़िर और मालदार आदमी की नाबालिग औलाद को भी ज़कात देना जाइज़ नहीं और शौहर अपनी बीवी और बीवी अपने शौहर को भी ज़कात नहीं दे सकती।

सवाल:- ज़कात का माल किन चीज़ों में ख़र्च करना जाइज़ नहीं है?

जवाब:- मस्जिद की तामीर, या मस्जिद की दूसरी ज़रूरीयात में। ऐसे ही मय्यत के कफ़न, दफ़न में या मय्यत के क़र्ज़ अदा करने में ख़र्च करना जाइज़ नहीं।

क़ाइदा:- यह है कि जिन चीज़ों में ज़कात की रक़म का कोई हक़दार मालिक न बनाया जा सके उन चीज़ों में ज़कात की रक़म

का ख़र्च करना जाइज़ नहीं।

हज का बयान

सवाल:– हज क्या है?

जवाब:– अरकाने इस्लाम का पांचवां रुक्न है (फ़र्ज़ है)।

सवाल:– हज कहां से साबित है?

जवाब:– क़ुरआन शरीफ़ और हदीस शरीफ़ से।

सवाल:– हज किसे कहते हैं?

जवाब:– एहराम बाँध कर नवीं ज़िल्हिज्जा को अ़रफ़ात के मैदान में ठहरने और काबा शरीफ़ के तवाफ़ करने को हज कहते हैं। और इसके लिये एक ख़ास वक़्त मुकर्रर है कि उसमें यह अफ़आल किये जायें तो हज है। हज का इन्कार करने वाला काफ़िर है।

सवाल:– हज कब फ़र्ज़ हुआ?

जवाब:– सन् 9 हिजरी में।

सवाल:– हज उम्र में कितनी बार फ़र्ज़ है?

जवाब:– सिर्फ़ एक बार।

सवाल:– हज की क्या फ़ज़ीलत है?

जवाब:– हज के बहुत से फ़ज़ाइल हैं। जैसे सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि हज गुनाहों को इस तरह दूर कर देता है जैसे आग की भट्टी लोहे, सोने, चाँदी के मैल को दूर कर देती है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाजी अपने घर वालों में से चार सौ की शफ़ाअ़त करेगा, वग़ैरह वग़ैरह।

सवाल:- हज के वाजिब होने की कितनी शर्तें हैं?

जवाब:- आठ शर्तें हैं। (1) इस्लाम। (2) हज फ़र्ज़ होने का शरई इल्म[1]। (3) बालिग़ होना। (4) आक़िल होना। (5) आज़ाद होना। (6) तन्दुरुस्त होना। (7) सफर–ख़र्च का मालिक और सवारी पर क़ादिर हो। (8) वक़्त (यानी हज के महीने में तमाम शर्तें पायी जायें।)

सवाल:- हज में कितनी चीज़ें फ़र्ज़ हैं?

जवाब:- सात चीज़ें फर्ज़ हैं। (1) एहराम (यह शर्त है)। (2) वक़ूफ़े अरफ़ा यानी नवीं ज़िलहिज्जा के आफ़ताब (सूरज) ढलने से दसवीं तारीख़ की सुबहे सादिक़ से पहले तक किसी वक़्त अरफ़ात में ठहरना। (3) तवाफ़े ज़ियारत। (4) नीयत। (5) तर्तीब यानी पहले एहराम बांधना फिर वक़ूफ़ फिर तवाफ। (6) हर फ़र्ज़ का अपने वक़्त पर होना। (7) मकान यानी ठहरने की जगह अरफ़ात में हो।

सवाल:- हज में कितने वाजिबात हैं?

जवाब:- अट्ठाईस हैं:- (1) जैसे मीक़ात से एहराम बांधना। (2) सफ़ा और मरवा के दरमियान दौड़ना। (3) दौड़ को सफ़ा से शुरू करना। (4) उज़्र न हो तो पैदल दौड़ना। (5) तवाफ़ हतीम के बाहर से हो। (6) दाहिने तरफ से तवाफ़ करना। (7) एहराम में जिन चीज़ों से मना किया गया है, उन से बचना। (8) मुज़्दल्फ़ा में ठहरना। (9) मग़रिब और इशा की नमाज़, इशा के वक़्त मुज़्दल्फ़ा

---

1. "शरई इल्म का तरीक़ा" दारुलहरब के रहने वालों के लिए एक आदिल या कम से कम दो मस्तूरुलहाल की भी खबर काफ़ी है, और दारुलइस्लाम में रहने वालों के लिए दारुलइस्लाम में इनका वजूद ही हुक्मी है।

में पढ़ना। इनके इलावा और भी बहुत से वाजिबात हैं।

नमाज़े जुमअ़:

सवाल:- नमाज़े जुमअ़: फ़र्ज़ है या वाजिब?

जवाब:- नमाज़े जुमअ़: फ़र्ज़े-ऐन है। और इसकी फ़ज़ीलत की ताकीद ज़ुहर से ज़्यादा है। और इसका इन्कार करने वाला काफ़िर है।

सवाल:- क्या नमाज़े जुमअ़: हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है?

जवाब:- जुमअ़: की नमाज़ आज़ाद, आक़िल, बालिग़, तन्दुरुस्त, मुक़ीम मर्दों पर फ़र्ज़ है, नाबालिग़ और ग़ुलामों और बीमारों, अपाहिजों, अन्धों, दीवानों और ऐसे ही उज़्र वालों और मुसाफ़िरों और औरतों पर जुमअ़: की नमाज़ फ़र्ज़ नहीं है।

सवाल:- नमाज़े जुमअ़: पढ़ने के लिये कितनी शर्तें हैं?

जवाब:- छः शर्तें हैं। (1) शहर या शहर की तरह क़स्बा वग़ैरह में होना। (2) ज़ुहर का वक़्त होना। (3) नमाज़ से पहले ख़ुतबा पढ़ना। (4) जमाअ़त। (5) आम इजाज़त। (6) सुलताने इस्लाम या उसका नाइब, जिसे ज़ुमा क़ाइम करने का हुक्म दिया।

सवाल:- अगर छोटे देहातों में नमाज़े जुमअ़: होती हो तो उसे बन्द करा देना चाहिये या बाक़ी रखना चाहिये?

जवाब:- बन्द नहीं कराना चाहिये।

सवाल:- उर्दू में ख़ुतबा पढ़ना या बीच में उर्दू के शेर पढ़ना कैसा है?

जवाब:- मकरूह है (ख़िलाफ़े सुन्नत)।

सवाल:- ख़ुतबा की अज़ान किस जगह होनी चाहिये?

जवाब:- ख़तीब के सामने मजिस्द के बाहर होनी चाहिये। मस्जिद के अन्दर अज़ान कहने को फुकहाए किराम ने मकरूह बताया है।

सवाल:- नमाज़े जुमअ: की जमाअत के लिये कम से कम कितने आदमियों का होना ज़रूरी है?

जवाब:- जुमअ: की नमाज़ में इमाम के इलावा कम से कम तीन आदमी होने ज़रूरी हैं। अगर तीन आदमी भी न होंगे तो जुमअ: की नमाज़ सही न होगी।

सवाल:- जुमअ: की कितनी रकअतें फर्ज़ हैं?

जवाब:- दो रकअतें।

सवाल:- नमाज़े जुमअ: के मुस्तहब्बात क्या-क्या हैं?

जवाब:- (1) मिस्वाक करना। (2) नमाज़े जुमअ: के लिये पहले से मस्जिद जाना। (3) अच्छे और सफ़ेद कपड़े पहनना। (4) तेल और खुशबू लगाना। (5) पहली सफ में बैठना मुस्तहब है। और ग़ुस्ल सुन्नत है।

चाँद देखने का बयान

सवाल:- चाँद देखने का क्या हुक्म है?

जवाब:- पांच महीनों के चाँद देखना वाजिबे किफ़ाया है।

(1) शअ़बान। (2) रमज़ान। (3) शव्वाल। (4) ज़ीक़अ़दा। (5) ज़िलहिज्जा।

सवाल:- रमज़ान शरीफ के चाँद के लिये मोआतबर (एतेबार वाली) शहादत क्या है?

जवाब:- अगर आसमान साफ न हो यानी बादल गर्दो गुबार

वग़ैरह नहीं हो तो रमज़ान शरीफ़ के चाँद के लिये एक दीनदार परहेज़गार मुसलमान की गवाही मोअ़तबर है। चाहे मर्द हो या औरत, आज़ाद हो या ग़ुलाम, अलबत्ता फ़ासिक़ की गवाही रमज़ान शरीफ़ के चाँद के लिये भी क़ाबिले कबूल नहीं है।

सवालः- ईद के चाँद के लिये मोअ़तबर गवाही क्या है?

जवाबः- अगर मतलअ़ (यानी आसमान) साफ़ न हो तो ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा के चाँद के लिये दो परहेज़गार दीनदार मर्द या इसी तरह एक मर्द और दो औरतों की गवाही शर्त है।

सवालः- और अगर मतलअ़ साफ़ हो तो कितने आदमियों की गवाही मोअ़तबर है?

जवाबः- अगर मतलअ़ साफ़ हो तो रमज़ान शरीफ़ और ईदुल फ़ित्र व ईदुल अज़हा के चाँद के लिये कम से कम इतने आदमियों की गवाही ज़रूरी है कि उतने आदमियों के झूट बोलने पर दिल को यक़ीन न आ सके। बल्कि उन लोगों की सच्चाई और चाँद देखे जाने का गुमाने ग़ालिब हो जाये।

सवालः- अगर चाँद देखने की ख़बर किसी दूर दराज़ शहर से आये तो मोअ़तबर होगी या नहीं।

जवाबः- शरीअ़त ने जो तरीक़े बताये हैं अगर उन तरीक़ों से ख़बर आई है तो उसका एतेबार किया जायेगा चाहे कितनी ही दूर से आई हो।

सवालः- अगर तार, टेलीफ़ोन, रेडियो या टेलीवीज़न वग़ैरह से ख़बर दी जाये तो यह ख़बर मोअ़तबर होगी या नहीं?

जवाबः- इस क़िस्म की ख़बरों का कोई एतेबार नहीं।

नोटः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है!

चाँद देखकर रोज़ा रखो और चाँद देखकर इफ़्तार करो। अगर 29 शअबान को चाँद नज़र न आये तो रोज़ा रखना मकरूह है, 29 शअबान को रमज़ान का चाँद देखने की कोशिश करना वाजिब है और 29 रजब को शअबान का चाँद देखना मुस्तहब है।

नमाज़े ईदुल फ़ित्र

सवालः– ईदुल फ़ित्र की नमाज़ फ़र्ज़ है या वाजिब?

जवाबः– ईद की नमाज़ सिर्फ़ उन लोगों पर वाजिब है जिन पर जुमअः फ़र्ज़ है। और इसकी अदा की वही शर्तें हैं जो जुमअः के लिये हैं। सिर्फ़ इतना ही फ़र्क़ है कि जुमअः में खुतबा शर्त है और ईदैन (यानी ईद–बकरईद) में सुन्नत। और दूसरा फ़र्क़ यह है कि जुमअः का ख़ुतबा नमाज़ से पहले है और ईदैन का नमाज़ के बाद। और ईदैन में न अज़ान है न इक़ामत, सिर्फ़ दो बार इतना कहने की इजाज़त है *अस्सलातु जामिअतुन*. बग़ैर किसी उज़्र के ईदैन की नमाज़ छोड़ना गुमराही और बिद्अत है।

सवालः– ईदै के दिन कौन से काम मसनून और मुस्तहब हैं?

जवाबः– (1) हजामत बनवाना। (2) नाख़ुन कटवाना। (3) ग़ुस्ल करना। (4) मिस्वाक करना। (5) अच्छे कपड़े पहनना। (6) अंगूठी पहनना। (7) ख़ुशबू लगाना। (8) फ़ज्र की नमाज़ मुहल्ले की मस्जिद में पढ़ना। (9) ईदगाह जल्द चले जाना। (10) नमाज़ से पहले सदक़ए–फ़ित्र अदा करना। (11) ईदगाह पैदल जाना। (12) दूसरे रास्ते से वापस आना। (13) नमाज़ के लिये जाने से पहले कुछ खजूरें या किसी और मीठी चीज़ का खाना। (15) ख़ुशी का इज़हार करना। (15) ज़्यादा से ज़्यादा

सद्का करना। (16) ईदगाह को इत्मीनान और इज़्ज़त व वकार के साथ नीची निगाह किये जाना। (17) आपस में मुबारकबाद देना मुस्तहब है।

सवालः– ईदुल फित्र की नमाज़ के लिये जाते हुए रास्ते में तकबीर कहना कैसा है?

जवाबः– ईदुल फित्र में अगर धीरे–धीरे तकबीर कहता हुआ जाये तो कोई हर्ज नहीं है अलबत्ता ईदुल अज़हा में बुलन्द आवाज़ से तकबीर कहते हुए जाना मुस्तहब है।

सवालः– ईदैन की नमाज़ों की कितनी रकअतें हैं और उसके पढ़ने की क्या तर्कीब है?

जवाबः– दोनों ईदों की नमाज़ दो रकअत है। पहले इस तरह नीयत करनी चाहिये।

नीयतः– नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़े ईदुल फित्र की वाजिब ज़ाइद छः तकबीरों के साथ, वास्ते अल्लाह तआला के इस इमाम के पीछे मुँह मेरा कअ़बा शरीफ़ की तरफ़।

नीयत के बाद तकबीरे तहरीमा कह कर हाथ बांध ले और सना पढ़े फिर दोनों हाथ कानों तक उठाते हुए *अल्लाहु अकबर* कह कर दोनों हाथ छोड़ दे। फिर दूसरी बार हाथ कानों तक उठा कर *अल्लाहु अकबर* कहे और हाथ छोड़ दे। फिर तीसरी बार हाथ कानों तक उठा कर *अल्लाहु अकबर* कहे और हाथ बांध ले। फिर हस्बे मामूल पहली रकअत पूरी करे। फिर जब दूसरी रकअत में इमाम क़िराअत से फ़ारिग़ हो जाये तो रुकूअ़ से पहले कानों तक हाथ उठा कर तकबीर कहे और हाथ छोड़ दे। फिर कानों तक हाथ उठा कर दूसरी तकबीर कहे और हाथ छोड़ दे। फिर कानों तक

हाथ उठा कर तीसरी तकबरी कहे और हाथ छोड़ दे। और फिर बग़ैर हाथ उठाये चौथी तकबीर कह कर रुकूअ़ में जाये और बताये हुये क़ाइदे के मुताबिक नमाज़ पूरी करे।

सदक़ए-फ़ित्र

सवाल:- सदक़ए-फ़ित्र किसे कहते हैं?

जवाब:- अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों पर एक सदक़ा मुकर्रर फ़रमाया है जो रमज़ान शरीफ़ के खत्म होने की खुशी में बतौरे शुक्रिया अदा किया जाता है। इसी को सदक़ए-फ़ित्र कहते हैं और वह दिन चूंकि खुशी का होता है इसी लिये इस दिन को ईदुल फ़ित्र कहते हैं।

सवाल:- सदक़ए-फ़ित्र के कुछ फ़ाइदे बयान कीजिये?

जवाब:- हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि बन्दा का रोज़ा आसमान और ज़मीन के बीच मुअ़ल्लक़ रहता है उस वक़्त तक कि वह सदक़ए-फ़ित्र अदा न करे।

सवाल:- सदक़ए-फ़ित्र किन लोगों पर वाजिब होगा?

जवाब:- सदक़ए-फ़ित्र हर मुसलमान आज़ाद मालिके निसाब पर वाजिब होता है चाहे उस ने रोज़े रखे हों या न रखे हों।

सवाल:- सदक़ए-फ़ित्र की सबसे बेहतर अदाइगी का वक़्त क्या है?

जवाब:- नमाज़े ईद के लिए जाने से पहले अदा कर देना बेहतर है और उसके बाद भी जाइज़ है।

सवाल:- अगर सदक़ए-फ़ित्र अदा न कर सका तो उसका क्या हुक्म है?

जवाबः– सदक़ए–फ़ित्र उम्र भर में वाजिब रहता है वक़्त के गुज़र जाने से साक़ित (ज़िम्मे से हटा हुआ) नहीं होता उस वक़्त तक कि अदा न करदे और जब भी अदा करेगा अदा ही होगा क़ज़ा न होगा।

सवालः– सदक़ए–फ़ित्र का अदा करना अपनी ही तरफ़ से वाजिब है या दूसरों की तरफ़ से भी?

जवाबः– जो मालिके निसाब है उसको अपनी तरफ़ से और अपनी नाबालिग़ औलाद की तरफ़ से सदक़ए–फ़ित्र वाजिब है इस शर्त के साथ कि नाबालिग़ औलाद का अपना ज़ाती माल न हो वरना उन्हीं के माल से अदा किया जायेगा।

सवालः– सदक़ए–फ़ित्र के वाजिब होने का क्या वक़्त है?

जवाबः– ईद के दिन सुबहे सादिक़ तुलूअ होते ही सदक़ए–फ़ित्र वाजिब होता है लिहाज़ा जो शख़्स इससे पहले मर गया उस पर सदक़ए–फ़ित्र वाजिब नहीं होता। जो बच्चा इससे पहले पैदा हुआ उसकी तरफ़ से दिया जायेगा।

सवालः– सदक़ए–फ़ित्र किन लोगों को देना ज़रूरी है?

जवाबः– जिन लोगों को ज़कात देना वाजिब है।

सवालः– सदक़ए–फ़ित्र की मिक़दार क्या है?

जवाबः– गेहूँ या उसका आटा या सत्तू आधा साअ़ और खजूर या मुनक़्क़ा या जौ या उसका आटा या सत्तू एक साअ़।

सवालः– साअ़ का वज़न क्या है?

जवाबः– साअ़ का वज़न तीन सौ इक्यावन रुपया भर है। और निस्फ़ साअ़ एक सौ पचहत्तर रुपये अठन्नी भर ऊपर। जिसकी मिक़दार अस्सी रुपये के सेर से दो सेर तीन छटांक

अठन्नी भर ऊपर होती है। या इस ज़माने के लिहाज़ से दो किलो 45 ग्राम गेहूँ।

नमाज़े ईदुल अज़हा

सवाल:– ईदुल अज़हा की नमाज़ कब पढ़ी जाती है?

जवाब:– ज़िल्हिज्जा की दसवीं तारीख़ को।

सवाल:– और ईदुल फ़ित्र की नमाज कब पढ़ी जाती है?

जवाब:– रमज़ान शरीफ़ ख़त्म होने के बाद ईद की पहली तारीख़ को।

सवाल:– यौमे अरफ़ा और यौमे नह्र किसको कहते हैं?

जवाब:– ज़िलहिज्जा क़ी नवीं तारीख़ को यौमे अरफ़ा कहते हैं और दसवीं तारीख़ को यौमे नह्र कहते हैं।

सवाल:– ईदुल अज़हा की नमाज़ वाजिब है या सुन्नत और उसके अहकाम क्या हैं?

जवाब:– नमाज़े ईदुल अज़हा भी नमाज़े ईदुल फ़ित्र की तरह वाजिब है इसकी भी दो रकअ़त हैं और ईदुल अज़हा के अहकाम भी वही हैं जो नमाज़े ईदुल फ़ित्र के हैं। सिर्फ़ कुछ बातों में फ़र्क़ है। ईदुल अज़हा में मुस्तहब यह है कि नमाज़ से पहले कुछ न खाये। चाहे क़ुरबानी करनी हो, या न करनी हो। और रास्ते में बुलन्द आवाज़ से तकबीर कहता जाये। और ईदुल अज़हा की नमाज़ उज़्र की वजह से ज़िलहिज्जा की बारहवीं तारीख़ तक बिला कराहत पढ़ सकते हैं। बारहवीं के बाद फिर नहीं हो सकती है। और बग़ैर उज़्र दसवीं के बाद मकरूह है। और अगर क़ुरबानी करनी है तो मुस्तहब यह है कि ज़िलहिज्जा की पहली तारीख़ से

दसवीं तारीख़ तक न हजामत बनवाये न नाख़ुन कटवाये।

सवालः– नमाज़े ईदुल अज़हा की नीयत किस तरह करनी चाहिये?

जवाबः– ईदुल फ़ित्र की जगह ईदुल अज़हा कहकर उसी तरह नीयत करनी चाहिये जिस तरह ईदुल फ़ित्र की नीयत की जाती है।

सवालः– ईदैन की नमाज़ के बाद मुसाफ़हा व मुआनक़ा करना जैसा कि मुसलमानों में राइज है कैसा है?

जवाबः– मुसाफ़हा व मुआनक़ा करना बेहतर है क्यों कि इस में खुशी का इज़हार है। और ईदैन की खुशी का इज़हार करना दुरुस्त है।

सवालः– तकबीरे तशरीक़ किसे कहते हैं?

जवाबः– तकबीर तशरीक यह है।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ.

وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ.

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ला इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द।

सवालः– तकबीरे तशरीक़ का कहना क्या है और किन–किन तारीख़ों में कहनी चाहिये?

जवाबः– नवीं ज़िलहिज्जा की फज्र से तेरहवीं की अस्र तक हर नमाज़े फ़र्ज़ पंजगाना के बाद जो जमाअ़ते मुस्तहब्बा से अदा की गयी एक बार तकबीर बुलन्द आवाज़ से कहना वाजिब है और तीन बार कहना अफ़ज़ल है।

क़ुरबानी का बयान

सवाल:- क़ुरबानी क्या है?

जवाब:- दीन और मिल्लत की निशानी और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मुकद्दस सुन्नत है।

सवाल:- क़ुरबानी में क्या सवाब है?

जवाब:- हर बाल के बदले एक नेकी है?

सवाल:- क़ुरबानी न करने वाले के लिए क्या वईद (सज़ा देने का वादा) है?

जवाब:- सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है जिस शख़्स को क़ुरबानी करने की हैसियत हो और वह क़ुरबानी न करे तो वह हमारी ईदगाह के क़रीब न आये।

सवाल:- क़ुरबानी किस पर वाजिब है?

जवाब:- मालिके निसाब पर।

सवाल:- जिस पर क़ुरबानी वाजिब है उसने दूसरे की तरफ़ से क़ुरबानी कर दी तो वाजिब अदा हुआ या नहीं?

जवाब:- नहीं।

सवाल:- क़ुरबानी के दिन कितने हैं?

जवाब:- दसवीं ज़िलहिज्जा से बारहवीं के सूरज डूबने तक।

सवाल:- किन जानवरों की क़ुरबानी दुरुस्त नहीं है?

जवाब:- बीमार, बहुत कमज़ोर या अन्धा, काना, लंगड़ा या नाक, कान सींग, थन का कोई हिस्सा तिहाई से ज्यादा कटा हुआ हो तो ऐसे जानवरों की क़ुरबानी दुरुस्त नहीं।

सवाल:- ज़बह करने से पहले कौन सी दुआ पढ़नी चाहिये?

जवाब:-

إِنِّىْ وَجَّهْتُ وَجْهِىَ لِلَّذِىْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۔ اِنَّ صَلَاتِىْ وَنُسُكِىْ وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِىْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ط

इन्नी वज्जहतु वज्हि-य लिल् लज़ी फ-त-रस्समावाति वल् अर्ज़ हनीफंव् वमा अना मिनल् मुश्रिकीन। इन्न सलाती व नुसुकी व मह्या-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन व बिज़ालि-क उमिर्तु व अना मिनल् मुस्लिमीन।

सवाल:- जानवर ज़बह करने का क्या तरीक़ा है?

जवाब:- जानवर को बायें पहलू पर क़िबला की तरफ़ लिटायें और दाहिना पाँव उसके शाने पर रख कर ज़बह करना चाहिये।

नोट:- जानवर के सामने न छूरी तेज़ करनी चाहिये और न जानवर को भूका प्यासा ज़बह करना चाहिये।

सवाल:- अच्छा अब यह बताइये कि ज़बह के वक़्त कौनसी दुआ पढ़नी चाहिये?

जवाब:- اَللّٰهُمَّ لَكَ وَمِنْكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहुम्म ल-क व मिन्-क बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर।

सवाल:- और ज़बह के बाद कौन सी दुआ पढ़नी चाहिये?

जवाब:- اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّىْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِيْلِكَ اِبْرَاهِيْمَ

وَحَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِمَا وَسَلَّمْ

अल्लाहुम्म त–क़ब्बल मिन्नी कमा त–क़ब्बल्–त मिन् ख़लीलि–क इबराही–म व हबीबि–क मुहम्मदिन् सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

(और अगर क़ुरबानी दूसरे की तरफ़ से हो तो मिन्नी के बजाये उस शख़्स का नाम लेना चाहिये।)

सवाल:– क़ुरबानी के गोश्त का मसरफ़ क्या है। (यानी किन लोगों पर गोश्त ख़र्च किया जाये?)

जवाब:– गोश्त के तीन हिस्से किये जायें। दो हिस्से अपने और अपने अज़ीज़ों और दोस्तों के लिये रखना चाहिये। और एक पूरा हिस्सा फ़क़ीरों पर तक़सीम करना चाहिये।

एतेकाफ़ का बयान

सवाल:– एतेकाफ़ किसे कहते हैं?

जवाब:– मस्जिद में अल्लाह के लिये नीयत के साथ ठहरने को एतेकाफ़ कहते हैं।

सवाल:– एतेकाफ़ के कुछ फ़ज़ीलतें बयान कीजिये?

जवाब:– इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने रमज़ान में दस दिनों का एतेकाफ़ किया तो वह ऐसा है कि जैसे कि उसने दो हज और दो उमरे किये इसके इलावा और बहुत सी फ़ज़ीलतें हैं।

सवाल:– एतेकाफ़ की कितनी क़िस्में हैं?

जवाब:– तीन क़िस्में हैं– वाजिब, सुन्नते मोअक्कदा और

मुस्तहब। नज़्र और मन्नत का एतेकाफ़ वाजिब है। रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी अशरा (हिस्सा) यानी दस दिन का एतेकाफ सुन्नते मोअक्कदा है इसके इलावा सब एतेकाफ मुस्तहब हैं। (सुन्नते मोअक्कदा से मुराद सुन्नते किफ़ाया है)।

सवाल:- रमज़ान शरीफ़ के एतेकाफ़ की इब्तेदा (शुरू) और इन्तेहा (ख़त्म) क्या है?

जवाब:- रमज़ान की बीस तारीख़ को सूरज डूबने से पहले शुरू होगा और ईद का चाँद देख कर एतेकाफ ख़त्म होगा ख़्वाह चाँद उन्तीस का हो या तीस का?

सवाल:- औरत कहां एतेकाफ़ करे।

जवाब:- औरत अपने घर में एतेकाफ़ करे जिस जगह नमाज़े पंजगाना पढ़ती है।

एतेकाफ़ के मुस्तहब्बात

सवाल:- एतेकाफ़ के मुस्तहब्बात क्या-क्या हैं?

जवाब:- क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत करना, अच्छी और नेक बातें करना, जामे मस्जिद में एतेकाफ करना, दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहना, इस्लामी दीनी किताबें पढ़ना और पढ़ाना वअ़ज़ (तक़रीर) और नसीहत करना।

एतेकाफ़ के मकरूहात व मुफ़सिदात

सवाल:- एतेकाफ में कौन सी बातें मकरूह हैं?

जवाब:- इबादत समझ कर बिल्कुल ख़ामोश रहना, लड़ाई झगड़ा या बेशर्मी की बातें करना, सामान मस्जिद में लाकर

सवाल:- नमाजे तरावीह कब पढ़ी जाती है?

जवाब:- रमज़ान शरीफ़ के महीने में बाद नमाजे इशा (तरावीह का वक़्त फ़र्ज़ इशा के बाद से तुलूअ़े फ़ज्र तक है।)

सवाल:- नमाजे तरावीह कितनी रकअ़त पढ़नी चाहिये?

जवाब:- बीस रकअ़त।

सवाल:- नमाजे वित्र कितनी रकअत्त पढ़नी चाहिये?

जवाब:- तीन रकअ़त (तीसरी रकअ़त में रुकूअ़ से पहले दुआए क़ुनूत पढ़नी चाहिये)।

सवाल:- नमाजे वित्र का पढ़ना कैसा है?

जवाब:- वाजिब (रमज़ान शरीफ़ में वित्र जमाअ़त के साथ [illegible] है।

सवालः– और नमाज़े तरावीह पढ़ना कैसा है?

जवाबः– सुन्नते मोअक्कदा है (मर्द और औरत दोनों के लिये)।

सवालः– तरावीह में क़ुरआन मजीद का ख़त्म करना कैसा है?

जवाबः– तरावीह में एक बार क़ुरआन शरीफ़ का ख़त्म करना सुन्नते मोअक्कदा है।

मुसाफ़िर की नमाज़

सवालः– शरीअ़त में मुसाफ़िर किसे कहते हैं?

जवाबः– शरीअ़त में मुसाफ़िर वह है जो तीन दिन की राह तक जाने के इरादे से बस्ती से बाहर हो।

सवालः– तीन दिन की राह से कितने मील मक़सूद है?

जवाबः– खुश्की में मील के हिसाब से उसकी मिक़दार $57\frac{3}{4}$ मील है।

सवालः– मुसाफ़िर और मुक़ीम की नमाज़ में क्या फ़र्क़ है?

जवाबः– मुसाफ़िर ज़ुहर अस्र और इशा की नमाज़ बजाये चार रकअत के दो रकअ़त पढ़ता है और बाक़ी नमाज़ें अपने हाल पर रहती हैं।

सवालः– चार रकअ़तों वाली नमाज़ में जो दो रकअ़त की कमी हो गयी उस कमी को क्या कहते हैं।

जवाबः– उसको क़स्र कहते हैं यानी मुसाफ़िर चार रकअतों वाली नमाज़ में नमाज़े क़स्र पढ़ता है।

सवालः– मुसाफ़िर किस वक़्त से नमाज़े क़स्र शुरू करेगा

और कब तक पढ़ेगा?

जवाबः– जब अपनी बस्ती की आबादी से बाहर निकल जाये तो उस वक़्त से क़स्र करने लगे। और उस वक़्त तक क़स्र पढ़े जब तक सफ़र में रहे और पन्द्रह दिन ठहरने की नीयत न करे। और अगर किसी जगह इकट्ठा पन्द्रह दिन ठहरने की नीयत कर ले तो क़स्र न पढ़े बल्कि पूरी पढ़े।

सवालः– इकट्ठा पन्द्रह दिन की नीयत से क्या मुराद है?

जवाबः– इसके माने यह हैं कि अगर किसी मुसाफ़िर ने चौदह दिन ठहरने की नीयत की और किसी वजह से फिर रुकना पड़ा तो दस दिन ठहरने की नीयत की। इसी तरह एक साल गुज़र गया लेकिन इकट्ठा पन्द्रह दिन की नीयत न की तो वह मुसाफ़िर ही रहेगा और क़स्र ही पढ़ता रहेगा।

सवालः– अगर मुसाफ़िर मुक़ीम के पीछे नमाज़ पढ़े तो क्या हुक्म है?

जवाबः– मुक़ीम के पीछे मुसाफ़िर को पूरी चारों रकअतें पढ़नी होंगी।

सवालः– और अगर मुसाफ़िर इमाम है तो क्या हुक्म है?

जवाबः– मुसाफ़िर दो रकअत पढ़कर सलाम फेर दे और मुक़ीम मुक़तदी अपनी चार रकअत पूरी करें। और मुसाफ़िर को मुसाफ़िर के पीछे क़स्र करना होगा।

मरीज़ की नमाज़

सवाल:- क्या मरीज़ बैठ कर नमाज़ पढ़ सकता है?

जवाब:- हां अगर मरीज़ में खड़े होने की ताकत न हो या खड़े होने से सख़्त तक्लीफ़ हो या बीमारी बढ़ जाने का अन्देशा हो या चकरा कर गिर जाने का ख़तरा हो, या खड़े होने की ताक़त तो है लेकिन रुकूअ और सज्दा नहीं कर सकता तो इन तमाम सूरतों में बैठ कर नमाज़ पढ़ना जाइज़ है।

सवाल:- क्या मरीज़ को किसी ख़ास तौर पर बैठना ज़रूरी है?

जवाब:- नहीं। मरीज़ को जिस तरह आसानी हो उस तरह बैठ कर नमाज़ पढ़े।

सवाल:- अगर मरीज़ बैठ कर नमाज़ नहीं पढ़ सकता तो क्या करे?

जवाब:- लेटे-लेटे नमाज़ पढ़े।

सवाल:- लेट कर नमाज़ पढ़ने की क्या सूरत होगी?

जवाब:- चित लेटे और पाँव क़िबला की तरफ़ करे लेकिन पाँव फैलाना नहीं चाहिये, घुटने खड़े रखे और सर के नीचे तकिया वग़ैरह रख कर ऊँचा करले और रुकूअ सज्दे के लिये सर झुका कर इशारे से नमाज़ पढ़े और यही सूरत अफ़ज़ल है। इसके इलावा और भी सूरतें जाइज़ हैं। जैसे उत्तर की जानिब सर करके दाहिनी करवट पर या दक्खिन की तरफ़ सर करके बायें करवट लेटे और इशारे से नमाज़ पढ़ ले।

सवाल:- अगर मरीज़ सर से इशारा भी न कर सके तो क्या

हुक्म है?

जवाब:- नमाज़ पढ़ने में देर करे। इसकी ज़रूरत नहीं, कि आंख या भौं या दिल के इशारे से पढ़े।

इस्तिस्का की नमाज़

सवाल:- नमाज़े इस्तिस्का किसे कहते हैं?

जवाब:- बारिश के लिये खुदा वन्दे करीम से दुआ करने व बख़्शिश चाहने को नमाज़े इस्तिस्का कहते हैं।

सवालः- क्या रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी नमाज़े इस्तिस्का पढ़ी है?

जवाब:- जी हां सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ी है। और हुज़ूर के बाद सहाबा ने भी पढ़ी है। बुखारी शरीफ़ की हदीस में हज़रत अनस से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हजरत फारूके आज़म, हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वसीले से बारिश तलब फरमाते और यह अर्ज़ (दुआ) करते कि ऐ अल्लाह तेरी तरफ़ हम अपने नबी का वसीला किया करते थे और तू पानी बरसाता था। अब हम तेरी तरफ नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा को वसीला करते हैं, तू बारिश नाज़िल फ़रमा। चुनांचे फ़ारूके आज़म जब ऐसा करते तो बारिश होती यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी ज़ाहिरी हयात में आगे होते और सहाबा पीछे सफ़ें बांध कर दुआ मांगते और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद आपके चचा को वसीला बना कर दुआ मांगते और अल्लाह तआला उनके वसीले से दुआयें कबूल फ़रमाता।

सवाल:– क्या नबीए करीम या सहाबा या अहले–बैत या औलियाए–किराम वग़ैरह को वसीला बनाना दुरुस्त है?

जवाब:– यक़ीनन दुरुस्त है। ऐसी दुआयें जो उन लोगों के वसीले से मांगी जाती हैं वह जल्द कबूल होती हैं।

सवाल:– नमाज़े इस्तिस्का जमाअत से पढ़नी चाहिये या बग़ैर जमाअत?

जवाब:– जमाअत से पढ़ना जाइज़ है मगर इख़्तेयार है ख़्वाह जमाअत से पढ़ी जाये या बग़ैर जमाअत के।

ग्रहन की नमाज़

सवाल:– सूरज ग्रहन की नमाज़ क्या है?

जवाब:– सुन्नते मोअक्कदा है (और जमाअत से पढ़नी मुस्तहब है)।

सवाल:– चाँद ग्रहन की नमाज़ क्या है?

जवाब:– मुस्तहब है (और चाँद ग्रहन की नमाज़ में जमाअत नहीं है)।

सवाल:– अगर ऐसे वक़्त ग्रहन लगा कि उस वक़्त नमाज़ पढ़ना मना है तो क्या करना चाहिये?

जवाब:– दुआ करनी चाहिये नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिये।

सवाल:– ग्रहन की नमाज़ कितनी रकअत पढ़नी चाहिये?

जवाब:– दो रकअत और उससे ज़ाइद भी पढ़ सकते हैं। ग्रहन की नमाज़ में न अज़ान है और न ही इक़ामत, न बुलन्द आवाज़ से क़िराअत। नमाज़ के बाद दुआ करनी चाहिये यहा तक कि ग्रहन ख़त्म हो जाये।

मुसीबत की नमाज़

नोटः– तेज़ आंधी आये, या दिन में सख़्त अंधेरा छा जाये, या रात में ख़ौफ़नाक रौशनी हो जाये, या लगातार बहुत ज़्यादा पानी बरसे, या बहुत ज़्यादा ओले पड़ें, या आसमान सुर्ख़ (लाल) हो जाये, या बिजलियाँ गिरें, या बहुत ज़्यादा तारे टूटें, या ताऊन (महामारी) वग़ैरह वबा फैले, या ज़लज़ले आयें, या दुश्मन का ख़तरा हो, या और कोई दहशतनाक बात पाई जाये तो इन सबके लिये दो रकअत नमाज़ मुस्तहब है।

सज्दए–सह्व का बयान

सवालः– सज्दए–सह्व किसे कहते हैं?

जवाबः– सह्व कहते हैं भूल जाने को। भूलने से कभी–कभी नमाज़ में कमी या ज़्यादती की वजह से नुक़सान आ जाता है, उसी को दूर करने के लिये नमाज़ के आख़री क़अदा में एक तरफ़ सलाम फेर कर दो सज्दे किये जाते हैं उसी को सज्दए–सह्व कहते हैं।

सवालः– सज्दए–सह्व करने का क्या तरीक़ा है।

जवाबः– क़अदए अख़ीरा में तशह्हुद पढ़ने के बाद एक तरफ़ सलाम फेर कर तकबीर कहता हुआ सज्दा करे फिर सज्दे से सर उठाये और सीधा बैठ कर तकबीर कहता हुआ दूसरा सज्दा करे। फिर सज्दे से सर उठा कर सीधा बैठ कर अत्तहियात और दुरूद शरीफ़ और दुआ पढ़कर दोनों तरफ़ सलाम फेर दे।

सवालः– सज्दए–सह्व किन सूरतों में वाजिब होता है?

जवाबः- किसी फ़र्ज़ में ताख़ीर होने या किसी वाजिब के छूट जाने, वाजिब के ताख़ीर हो जाने, या किसी वाजिब की कैफ़ियत बदल देने, या फ़र्ज़ को मुकर्रर (दो-तीन बार) कर देने से सज्दए-सह्व वाजिब होता है।

सवालः- सज्दए-सह्व सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ों में वाजिब होता है या हर नमाज़ों में?

जवाबः- तमाम नमाज़ों में सज्दए-सह्व का हुक्म एक ही तरह है।

सवालः- अगर सलाम फेरे बग़ैर सज्दए-सह्व कर लिया तो क्या हुक्म है?

जवाबः- सज्दए-सह्व तो काफ़ी है मगर ऐसा करना मकरूह तन्ज़ीही है।

सवालः- अगर एक नमाज़ में कई बार ऐसा सह्व हो जाये जिस से सज्दए-सह्व लाज़िम आये तो कितने सज्दे करें?

जवाबः- सिर्फ़ एक दफ़ा दो सज्दए सह्व कर लेना काफ़ी है।

सवालः- जिन चीज़ों को भूल कर करने से सज्दए-सह्व वाजिब होता है, अगर उन्हें जान बूझ कर किया जाये तो क्या हुक्म है?

जवाबः- ऐसी सूरत में सज्दए-सह्व काफ़ी न होगा बल्कि नमाज़ को लौटाना वाजिब है।

सज्दए-तिलावत का बयान

सवालः- सज्दए-तिलावत किसे कहते हैं?

जवाबः- क़ुरआन शरीफ़ के पढ़ने को तिलावत कहते हैं।

क़ुरआन शरीफ़ में चन्द ऐसे मक़ाम (जगह) हैं जिनके पढ़ने या किसी को पढ़ते हुये सुनने से सज्दा करना वाजिब हो जाता है। इसी को सज्दए–तिलावत कहते हैं।

सवाल:– सज्दए–तिलावत के कुछ फ़ाइदे बयान कीजिये?

जवाब:– हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जब बन्दा आयते–सज्दा पढ़ कर सज्दा करता है तो शैतान हट जाता है और रोकर कहता है हाये मेरी बरबादी कि इब्ने आदम (आदम की औलाद) को सज्दे का हुक्म हुआ, उसने सज्दा किया, उसके लिये जन्नत है और मुझे हुक्म हुआ मैंने इन्कार किया मेरे लिये दोज़ख़ है।

सवाल:– वह कितनी जगहें हैं जिनको पढ़ने से या सुनने से सज्दा करना पड़ता है?

जवाब:– पूरे क़ुरआन शरीफ़ में चौदह (14) जगहें हैं।

सवाल:– आयते सज्दा के पढ़ने या सुनने में एक सज्दा वाजिब होता है या दो?

जवाब:– सिर्फ़ एक सज्दा।

सवाल:– सज्दए–तिलावत करने का क्या तरीक़ा है?

जवाब:– नमाज़ से बाहर सज्दा करने का बेहतर तरीक़ा यह है कि खड़े होकर तकबीर कहता हुआ सज्दा करे और तकबीर कहता हुआ उठ खड़ा हो।

सवाल:– अगर कोई शख़्स क़ुरआन की तिलावत में आगे पीछे से पढ़ ले और सिर्फ़ आयते सज्दा छोड़ दे तो क्या हुक्म है?

जवाब:– ऐसा करना मकरूह है।

सवाल:– अगर एक मजलिस में एक आयते सज्दा कई बार

पढ़ी जाये तो क्या हुक्म है?

जवाबः– उन पर एक ही सज्दा वाजिब है।

सवालः– एक मजलिस में सज्दे की दो आयतें पढ़ी गयीं या एक आयत दो मजलिसों में पढ़ी गयी तो क्या हुक्म है?

जवाबः– एक मजलिस में जितनी मुख़्तलिफ़ (अलग–अलग) सज्दों की आयतें पढ़ीं या एक आयत जितनी मजलिसों में बार–बार पढ़ी है उतने सज्दे वाजिब होंगे।

इस्लाम के कलिमे

कलिमा तय्यबाः– لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

लाइला–ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह

कलिमए शहादतः– اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अश्–हदु अल्लाइला–ह इल्लल्लाहु व अश्–हदु अन्न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू

कलिमए तमजीदः– سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِيْمِ

सुब्हानल्लाहि वल्–हम्दु लिल्लाहि व ला–इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु व ला हौ–ल व ला .कुव्वतः इल्ला बिल्लाहिल अ़ली इल्अ़ज़ीम

कलिमए तौहीदः– لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ

ला इला–ह इल्लल्लाहु वह्–दहू ला शरी–क लहू
लहुल–मुल्कु व लहुल–हम्दु युह्यी व युमीतु बि–यदिहिल ख़ैरु
व हु–व अला कुल्लि शैइन कदीर॰

कलिमए रद्दे कुफ्र اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَیْئًا
وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَآ اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّاْتُ
مِنَ الْكُفْرِ وَالْمَعَاصِیْ كُلِّهَا اَسْلَمْتُ وَاٰمَنْتُ وَاَقُوْلُ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ुबि–क मिन् अन् उशरि–क बि–क
शयअंव्–व अना अअ्–लमु बिही व अस्तग़्फ़िरु–क लिमा ला
अअ्–लमु बिही तुब्तु अन्हु व त–बर्रातु मिनल् कुफ़्रि वल्
मआसी कुल्लिहा अस्लम्तु व आमन्तु व अक़ूलु ला इला–ह
इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह॰

ईमाने मुजमल:-

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَصِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ
جَمِیْعَ اَحْكَامِهٖ

आमन्तु बिल्लाहि कमा हु–व बि–अस्माएही व सिफ़ातिही व
कबिल्तु जमी–अ अह्कामिही॰

ईमाने मुफ़स्सल:- اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ
خَیْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰی وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ۔

आमन्तु बिल्लाहि व मलाए–कतिही व कुतुबिही व रुसुलिही
वल्–यौमिल आख़िरि वल्–कदरि ख़ैरिही व शर्रिही मिनल्लाहि
तआला वल्–बअ्सि बअ्दल–मौत॰